वर्ष 27 अंक 8 अगस्त - 2025 ₹ 3

हर घर में हिन्दी, हर मन में हिन्दी ।

SHABARI SALEM

ज्ञानात् परं सुखम्

# शबरी

## SHABARI SIKSHA SAMACHAR शिक्षा समाचार

अहिन्दी भाषा प्रदेश तमिलनाडु के सेलम में 27 वर्षों से निरंतर प्रकाशित एक मात्र मासिका

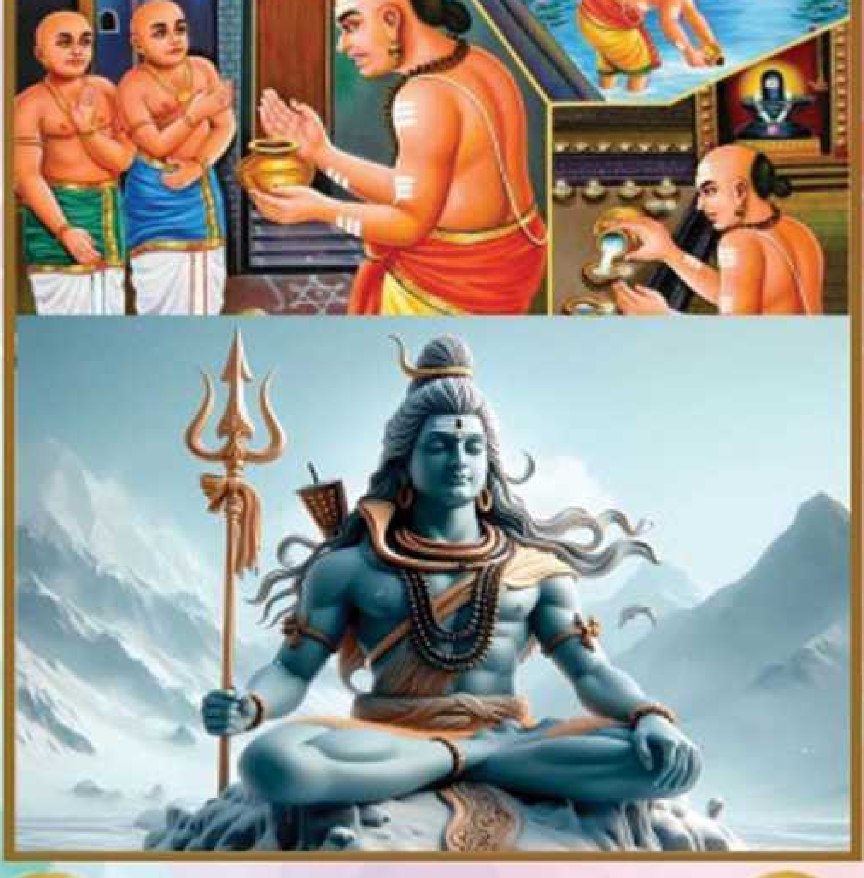

नमिनंदीयडिगल महान, भक्ति से भरा सुमन ।
नीर से दिया जलाकर, खिलाये भक्ति सुमन ।।

# Pathra Lekhan

## சபரியின் கற்போம் கடிதம்

உள்ளத்து உணர்வுகளைப் பிறரோடு பகிர்ந்துகொள்ள ...

எல்லாச் சூழ்நிலைகளிலும் கடிதம் எழுதுவது எப்படி ...

கடிதம் பல வகைகளில் மனிதனுக்கு உதவி வருகிறது. இமெயில் வருகைக்குப் பின்னும் கடிதங்கள் இன்றும் போற்றப்பட்டு வருகின்றன. நமது அன்றாட வாழ்வில் பயன்படும் பல கடிதங்களை ஹிந்தியில் உங்களுக்காக தொகுத்தளித்துள்ளோம். அதே கடிதத்தை அழகுத் தமிழிலும், ஆங்கிலத்திலும் உங்களுக்காக வழங்கியுள்ளோம்.

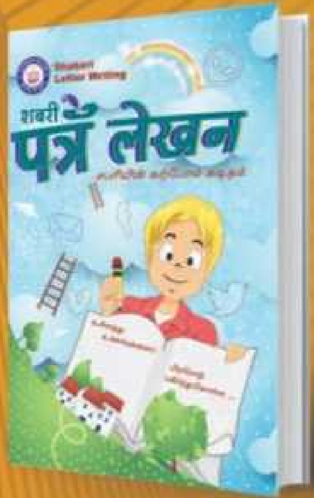


JUST ₹150/- ONLY

# SHABARI SHABDHA SAAGAR

Trilingual Dictionary

1632 Pages

Just ₹750.00 Only

51,000 Words

ஹிந்தி
ஹிந்தி
ஆங்கிலம்
தமிழ்
அகராதி

கற்போர் கற்பிப்போரின்
சொல் வளம் பெருகிட
ஹிந்தியோடு தமிழும் ஆங்கிலமும்
தங்களின் நுனி விரலில் தவழ்ந்திட
51,000 சொற்களின் அணிவகுப்பு
சபரியின் தரமானதோர் படைப்பு

வாழ்க்கை பயனுற வானம் வசப்பட
வார்த்தைகளால் வளம் பெற்று சிறந்திட

हर घर में हिन्दी, हर मन में हिन्दी
SHABARI SALEM
ज्ञानात् परं सुखम्

पढ़ो मन भरके

# शबरी
## शिक्षा समाचार

वर्ष 27, अंक 08 | मूल्य ₹ 3/- | अगस्त – 2025



प्रधान संपादक
**एम. वेंकटेश्वरन**
संयुक्त संपादक
**आर. जयकरन**
सहायक संपादक
**आर.जे. संतोष कुमार**



**कार्यालय**
**Shabari Siksha Samachar**
R.O.: 37, First Agraharam, Salem - 636 001.
A.O.: Shabari Palace,
193 & 194, Second Agraharam,
Salem - 636 001. Tamil Nadu. India.
Phone : 94431-65414, 94433-65414
e-mail : shabarisamachar@gmail.com



**संस्थापक व प्रकाशक**
Published & Owned by M. Sridhar, on behalf of SHABARI SIKSHA SAMACHAR, 37, First Agraharam, Salem - 636 001 & Printed by D. SivaKumar at Sivamurthy Press, 35, A.P. Koil Street, Salem - 636001.



समस्त न्यायिक विवादों के लिए क्षेत्राधिकार सेलम होगा । शबरी शिक्षा समाचार में छपी किसी भी सामग्री से संबंधित पूछताछ व किसी भी प्रकार की कार्यवाही प्रकाशन तिथि से एक माह के अंदर की जा सकती है, बाद में किसी भी पूछताछ पर जवाब हेतु बाध्य नहीं । सभी सामग्री से संपादक सम्मत या सहमत हो यह ज़रूरी नहीं ।



**SHABARI BOOK SALES**
Whatsapp : 9443165414
Office Phone : 9842765414
Office Phone : 9443365414

**VANI VIKAS NUMBER**
0427-4265414
0427-4552100
Office Hrs : 10.00 AM to 5.00 PM

# इस अंक में


संपादक की कलम से .............. 5
अनमोल वचन ...................... 6
विदाई ............................ 7
भावना ............................ 8
पार्ट टाइम शिक्षा सेवी फुल टाइम 10
जिंदगी में रंग .................... 11
सृष्टि के नियम .................... 12
महामृत्युंजय महेश्वर ............... 12
लक्ष्य प्राप्ति: चुनौतियाँ और सूत्र .. 13
उपनिषदों में शिव का महत्व ..... 14
नहीं आपस में लड़ना ............ 15
राम गुण गाइए ! .................. 15
मन का दर्पण ..................... 16
भारत देश महान ! ............... 16
शंकर भोले नाथ ! ............... 16
ये मेरा जीवन है एक संग्राम निरत 17
कागज ने लेखनी से कहा ........ 17
हरिहरब्रह्म.......................... 18
गीत .............................. 19
न्यू इंडिया गीत ................... 19
क्यों होते हो निराश अभी से ..... 20
देवता (सॉनेट) ................... 20
मन ............................... 21
बचपन ........................... 21
पोर-पोर मचल उठा ............. 22
पेड़ ................................ 22
आदतें बन ही जाती है... ........ 23
मैं उन्हें नहीं जानता .............. 23
सत्य कर्म - सत्य ही धर्म........ 24
सनातन की वाणी ................ 25
महान संत शिव भक्त-तमिल नायनमार 28
नीलकंठ .......................... 30
बीत रही है धीरे धीरे... .......... 31
पति पत्नी ......................... 32
स्वर्णिम प्रकृति ................... 33
चलो चरित्र बदला जाये.......... 33
स्याही की उड़ान ................. 34
दोस्त ............................. 34
सुरुचि और सेहत ................ 35
भोले का संदेशा................... 35
मरने से पहले मरता क्यों है । .... 36
पावस ............................ 36
कविताएँ .......................... 37
मेरे घर का आंगन ............... 38
पावन मन अनुरागी ............... 39
हे घृणा ! ......................... 39
मनचले सावन ने... ............... 40
उजास एक आस.................. 40
पाठकों के पत्र ... ............... 41
नवांकुर ........................... 42
पठितम्, अभिरुचितम्, अनूदितम् . 44
தமிழமுது .......................... 45
அருள் உலா ....................... 46


## வாணிவிகாஸ் வாய்மொழித் தேர்வு விவரம்

| தேர்வு நடைபெறும் மாதம் | தேர்வு நடைபெறும் தேதி | தேர்வு விண்ணப்பங்கள் வழங்கும் நாள் கடைசி தேதி | ₹10/- தாமதக் கட்டணத்துடன் செலுத்த |
|---|---|---|---|
| அக்டோபர்-2025 | 26-10-2025 | 01-07-2025 to 31-08-2025 | 05-09-2025 |
| ஜனவரி-2026 | 18-01-2026 | 01-10-2025 to 30-11-2025 | 05-12-2025 |
| ஏப்ரல்-2026 | 19-04-2026 | 01-01-2026 to 28-02-2026 | 05-03-2026 |
| ஜூலை-2026 | 19-07-2026 | 01-04-2026 to 31-05-2026 | 05-06-2026 |

**வாணி விகாஸ் தேர்வுகளுக்குரிய விண்ணப்பங்கள் ஆன்லைன் (ONLINE) வாயிலாக மட்டுமே (https://shabari.in) ஏற்றுக் கொள்ளப்படும்.**

★ **D.D.** *மற்றும் மணியார்டர் ஏற்றுக் கொள்ளப்படமாட்டாது.*

our web portal @ **https://shabari.in**

## ✍ *संपादक की कलम से ...*

प्रिय पाठक बन्धुवर, सस्नेह वन्दे ।

भारत के प्राचीनतम प्रदेशों में तमिलनाडु का अपना अलग स्थान है । कहा जाता है कि तमिल भाषा का उद्भव पत्थर के होने से पहले मिट्टी के होने के पहले से ही हुआ था । एक जमाना ऐसा था जबकि दुनिया भर में तमिल की तूती बोलती थी । तमिलनाडु का इतिहास खासकर चेर, चोल और पांडय राजाओं के पराक्रम पूर्ण कहानियों से भरा है ।

चोल राजा महादेव शिव के महानतम भक्त थे । दक्षिण भारत में ही नहीं भारत पार करके अनेकानेक देश में शिव मंदिरों का निर्माण चोल राजाओं से हुआ था । राज राज चोलन एन वीरता के प्रतीक रहे । उनका पुत्र राजेंद्र चोलन 17 साल से युद्ध करते रहे और अपने राज्य की सीमा को भारत से भी आगे बढाकर विभिन्न देशों पर भी अधिकार जमा लिया था । कन्या कुमरी से गंगा तक चोल राज्य का संबंध बना रहा ।

राजेंद्र चोलन ने अपनी नई राजधानी के रूप में गंगैकोंड चोलापुरम का निर्माण किया । वहाँ उनसे निर्मित शिव मंदिर अपने रूप लावण्यता के लिए काफी प्रशंसनीय है । गंगा से नीर लाकर यहाँ के झील में उसे भरकर भारत को पवित्र बनाने का माननीय कार्य इस महान राजा से किया गया । गंगैकोंड चोलपुरम का मंदिर प्राचीनतम होने के साथ अपने ढंग का अकेला है । उसके निर्माण होकर आज हजार साल हो चुका है । इस मंदिर की गरिमा बढ़ाने के लिए और भारत में ही नहीं विश्व भर में इसकी कीर्ति फैलाने के लिए भारत के प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेंद्र मोदी जी का यहाँ आना और इसकी शोभा बढ़ाना हर भारतीय से प्रशंसनीय बात हो चुकी है ।

भारतीय परंपरा और भक्ति परंपरा की गरिमा बढ़ाने में नरेंद्र मोदी जी की यह यात्रा तमिलनाडु की कीर्ति का पताका बन चुकी है । तमिल की संस्कृति और सभ्यता का प्रचार प्रसार इससे और भी थी तीव्रतम हो चुका है । भारतीय एकता और भारतीय संस्कृति के प्रतीक के रूप में आज हम माननीय प्रधानमंत्री को देख रहे हैं । भारतीय गौरव और भारत को आगे बढ़ाने का उनका प्रयास हमेशा जीतते रहे । यही हमारी कामना है ।

जय हिन्द !                                                    जय हिन्दी !!

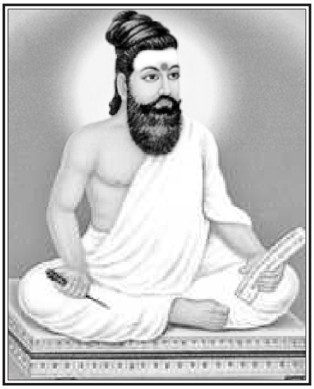

# अनमोल वचन

**समझना**

तमिल संत महान तिरुवल्लुवर का कहना है – प्रियमा की नजर दो प्रकार की होती है । वह जिस तरह से देखती है उससे प्यार का रोग हो जाता है । उसकी दूसरी नजर उस रोग का इलाज करती है ।

अपनी आँखों से जब प्रियतमा छुप छुपकर देखती है तब उससे उत्पन्न होनेवाली काम भावना आधी मात्रा की नहीं है उससे भी ज्यादा है ।

जब मैंने उसे नहीं देखा तब उसने मुझे देखा । उस नजर में लज्जा भरी पडी थी । उसकी यह नजर हमारे प्यार रूपी पौधे को बढ़ाने का काम करती है ।

जब मैं उसे देखता हूँ तब वह मुझे न देखकर जमीन को देखेगी । जब मैं उसे नहीं देखूँगा तब वह मुझे देखकर मन ही मन खुश होती है ।

वह मुझे खुली नजरों से नहीं देखती है । लेकिन आँखों को सिखुडकर मुझे देखती हुई मन ही मन खुश जरूर हो जाती है ।

अपने मन में भरा प्यार को छिपाकर वह मुझसे पराये नर के समान बात करती है । फिर भी उसके मन में मेरे प्रति जो प्यार है वह जल्द ही प्रकट हो जायेगा ।

शत्रुता के बिन कटुवचन, शत्रु को देखने जैसे नजर अपनानेवाले असल में मन में प्यार भरे ठहरते हैं ।

जब मैं उसे देखता हूँ तब वह अपने प्यार को प्रकट करते हुए हँसती है । तब उसके चेहरे तथा शरीर में एक नई झलक आती है ।

प्रेमी और प्रेमिका जब सामान्य जगत में सबके सामने मिलते हैं तब वे एक दूसरे पर ऐसा नजर डालते हैं जैसे वे एक दूसरे को जानते ही नहीं है ।

एक दूसरे के प्रति पवित्र प्यार से जब आँखें आपस में बात करने लगती हैं तब शब्दों की जरूरत ही क्या है ?

# विदाई

– साहित्य रत्न श्री. जेमि,
कोवै, तमिलनाडु

करना क्या है जीवन में भरना क्या है ? सोचता रहता है मन सबका
कमाना प्रधान बन जाता है धन जमाना प्रधान बन जाता है यहाँ
एक नहीं एक मात्र नहीं सबके सब भागते रहते हैं धन के पीछे
कुछ करके थक जाते हैं अथक प्रयास फिर भी भर नहीं पाते हैं
शारीरिक श्रम करनेवाले भर नहीं पाते हैं उतने सारे रुपए यहाँ
काम करके जीनेवाले भी कमा पाते हैं जितना वेतन मिलता यहाँ
कपटी कमा लेते हैं अपने आवश्यक से भी अधिक मन ऊँचा
काला धन अपना लेते हैं पता नहीं उनको भी जितना है उनके यहाँ ।

कमाने के रास्ते हैं अनेकानेक कमानेवाले के प्रयास भी अनेकानेक
कमाकर करते क्या है उसे जानना है समझना है हमें अभी
अपने परिवार के सदस्य को भी ना देकर धन को लेकर लड़ना
साथ जन्में भाई बहन भी शत्रु के समान बिना कारण ही भिड़ना
खून तक कर बैठ जाते हैं एक दूसरे को मार गिराना चाहते हैं
सीमा से ज्यादा धन अपना कर बताओ यार ये क्या खरीदना चाहते हैं ?
दादा परदादा के कमाए धन पर भी लड़ लेते हैं एक दूसरे पर
अपने ही भाई से छीन कर अपना लेते हैं उसे दूर भागते हैं ।

धन-धान्य जो पाया गया है धरती की सारी सुविधाएँ यहाँ
कोई साथ लेकर नहीं आए पाए सब कुछ वे इस धरती से ही यहाँ
संचित धन का उपयोग जो सही मात्रा से सही रूप में कर पता है
सदा वही समाज और देश में आदरणीय नाम कमा पाता है
अधिक मात्रा के हो जाने पर अमृत भी विष हो जाता है
अपने से जितना हो सके उतना दान करने पर नाम वह पाता है
सब कुछ अपने लिए मत रखो दान दिया करो बनो तुम दानी
जाएगा जब-जब छोड़कर परिवारवाले ही नहीं दुनिया करें तेरी विदाई ।

# भावना

– विद्या सागर आर.जे. संतोष कुमार,
कोवै, तमिलनाडु

अरे ! इस अंजली को क्या हो गया ? पहले जो उड़ती तितली जैसी एकदम मस्त रहा करती थी अब मगरमच्छ के समान मुँह बंद करके एक ही जगह बैठी रहती है । मेरे वर्ग में सबसे अच्छी लड़की वही थी । सबका ख्याल करती हुई वह अपना भी ख्याल रखती थी । उसकी हँसी अरे जितना भी तनाव हो या दुख दूर कर देती थी । हमेशा उसके पीछे कोई ना कोई रहते थे । उसके बोलने की शैली और उसकी संवेदनाएँ हर एक को उसके पास खींच लेती थी । अपनी भावनाओं को सिर्फ शब्दों से ही नहीं वह तो अपनी आँखे से भी व्यक्त करती थी । उसके हाथ और उसके संपूर्ण अंग उसकी भावनाओं की अभिव्यक्ति करती थी । अब वह तो एकदम खोई खोई लगती है । उसको ऐसे नहीं छोड़ सकते हैं । कल उसे बात करके सही करना है । अंजली के बारे में सोचती हुई घर जा रही थी उसकी शिक्षिका अनंता ।

एक सफल और सही शिक्षिका हर छात्रा को अपनी बेटी के समान और हर छात्र को अपने बेटे के समान मानती है । जिस प्रकार एक माँ अपनी पुत्री का ख्याल करती है उसी प्रकार एक शिक्षिका अपनी छात्रा की ख्याल रखती है । अनंत का चेहरा भी थोड़ा उदास ही रहा । वह सुबह होने का इंतजार कर रही थी ।

अगले दिन दस मिनट पहले ही अपने वर्ग में पहुँच चुकी थी अनंता । अंजली के आने का इंतजार कर रही थी । दो मिनट बाद अंजली अपने वर्ग में आई । वर्ग के अंदर घुसते ही अनंत ने उसे कंधों में पकड़ लिया और अपने पास खींच लिया । कैसी हो बेटी ? आप तो कभी उदास नहीं रहते हैं, अभी क्या हो गया आपको ? मेरी अंजली बिटिया को मैं ऐसे देख नहीं सकती । अब बताओ कि आप हमेशा उदास क्यों बैठी रहती हो ? आपकी हँसी कहाँ चली गई ? और सबसे आप दूर क्यों जा रही हो ?

अंजली के आँसू निकलने लगे । उसके गले लगाते हुए उसके गाल पोंछते हुए अनंता ने कहा – अरे बेटा बताओ तो हम जान सकते हैं । धीरे–

धीरे अंजली ने कहा – मेरे मम्मी पापा हमेशा लड़ते रहते हैं । पहले भी मुझे बहुत समय देते थे, खेलते थे । आजकल दोनों लड़के मुँह फुला कर बैठ जाते हैं । मुझे भी कभी कुछ बात नहीं करते । मुझे समझ में नहीं आ रहा है कि क्या करूँ ? क्या वे दोनों मुझसे प्यार नहीं करते ? अरे ऐसे कैसे हो सकता है बेटा पूरी दुनिया आपसे प्यार करती है । आप एकदम अच्छी लड़की हो । मेरी बात मानना दो दिन के बाद मैं तुमसे ऐसे ही प्यार करेंगे जैसे पहले करते थे । अंजली थोड़ा संभल गई थी उसके चेहरे में हँसी की एक रेखा चलने लगी ।

इत्तेफाक से अगले दिन अभिभावक और शिक्षक का बैठक था । अनंता उसे वक्त को खोना नहीं चाहती थी । दोनों को फोन करके साथ में आने के लिए कही थी । दोनों को अपने सामने बिठाकर उसने पूछा – आप दोनों बहुत बड़े हैं । अच्छाई बुराई दोनों को समझ लेने की शक्ति आप में है । अगर आप में कोई मतभेद हो तो उसे अकेले में बात करके उसका समाधान अपना लीजिए । बच्ची के सामने ऐसे लड़ते रहेंगे तो उसकी भावनाओं को ठेस पहुँचेगी ।

हमारी जिंदगी शादी के पहले कैसे भी हो बच्चों के हो जाने पर जिंदगी उनकी हो जाती है । हमें सिर्फ अपने लिए नहीं उनके लिए भी जीना पड़ता है । बच्चों के सामने जो व्यवहार हम करते हैं उसका असर उन पर पड़ता है । आप दोनों के चरित्र और शब्दों का असर अंजली पर जरुर पड़ेगा ।

हम ऐसी गलती आगे कभी नहीं करेंगे । समझ में आ रहा है कि हमने जो किया है वह गलत किया है और अपनी बेटी को बहुत दुखी बना चुके हैं । आपके सलाह और हमारी बेटी के प्रति आपके प्यार के लिए बहुत–बहुत धन्यवाद । आगे कभी ऐसे नहीं होगा । अपनी पत्नी को देखते हुए अविनाश ने एक वादा किया । पत्नी भी इस बात से सहमत जी और जाते–जाते दोनों अपनी बेटी को पूरा प्यार देते हुए घर ले जा रहे थे ।

---

अपना पेट जब भर गया तब तो रोका करो
खुद के लिए सब कुछ मत रखो
अरे कुछ तो दिया करो ।

# पार्ट टाइम शिक्षा सेवी फुल टाइम फेसबुक जीवी (व्यंग्य)

– श्री. विनोद कुमार विक्की,
खगड़िया, बिहार

साहब कहने को सरकारी सेवक हैं लेकिन पार्ट टाइमवाले । फुलटाइम में वो साहित्य साधना अथवा आन-लाइन वीडियो के अवलोकन में तल्लीन रहते हैं । जनाब की उपस्थिति अपने सरकारी कार्यालय अथवा विद्यालय, महाविद्यालय से ज्यादा सोशल मीडिया अथवा आन लाइन प्लेटफार्म पर दिख जाती हैं ।

खुदा न खास्ता यदि आफलाइन मोड में कार्य स्थल पर उपलब्ध भी रहते हैं, तो मोबाइल, लैपटॉप, टैबलेट आदि के माध्यम से सोशल मीडिया के आन-लाइन प्लेटफॉर्म पर ही विचरण करते रहते हैं ।

साहित्य प्रेम कहें अथवा छपास की लिप्सा या फिर नयनाभिराम की अभिलाषा जनाब के दैनिक जीवन का दो तिहाई समय फेसबुक, इंस्टा अथवा व्हाट्सएप्प पर ही व्यतीत होता है ।

प्रकृति में यदि सोशल मीडिया का ईजाद ना हुआ होता, तो साहब का दैनिक इंटरनेट डाटा का नाइंटी परशेंट डाटा बर्बाद ही हो जाता । यह और बात है कि ऐसे पार्ट टाइम सरकारी सेवक तथा फुल टाइम साहित्यकार, ब्लॉगर, इंफ्लुएंसर, रील्स, मीम्स, यूट्यूब व्यूवर्स होने के कारण जनाब को डाटा लोन लेना पड़ जाता है अथवा डाटा उपभोग के लिए विभागीय वाई-फाई की शरण में जाना पड़ जाता है ।

सोशल मीडिया में घोर आस्था रखनेवाले सरकारी सेवक खासकर शिक्षक अथवा व्याख्याता जिन्हें साहित्यकार होने का आंशिक भ्रम, वहम अथवा अहम् है, सोशल मीडिया के प्रति उनकी असीम भक्ति देखते ही बनती है । इनके प्रोफाइल पर प्रत्येक कार्य दिवस में खाने, घूमने, लिखने से लेकर छपने तक का अपडेट तो रहता है लेकिन सरकारी वेतन के एवज में किये गये सरकारी कार्यों या दायित्वों का लेखा-जोखा ढूँढने से शायद ही मिल पाता है ।

प्रत्येक घंटा सोशल मीडिया पर अपना साहित्यिक अपडेट करने के व्यस्त शेड्यूल में से जनाब आजीविका अथवा सर्विस के लिए किस प्रकार और कितना समय निकाल पाते हैं यह किसी रहस्य से कम नहीं । कार्य स्थल से नदारद और फेसबुक पर बरामद होने वाले ऐसे पार्ट टाइम सरकारी सेवक एवं फुल टाइम सोशल मीडिया सेवी की श्रम साधना स्तुत्य है ।

# जिंदगी में रंग

– डॉ. अलका अग्रवाल,
जयपुर, राजस्थान

4 साल की होते ही वह बड़ी हो गई थी, क्योंकि इस छोटी सी उम्र में ही उसके घर में छोटी बहन आ गई थी ।... और 8 साल की उम्र में तो वह तीन भाई–बहनों से बड़ी थी । अब वह इतनी बड़ी थी कि उसे बच्चों जैसे बाहर खेलने की कोई जरूरत नहीं थी । छोटे भाई–बहनों का ध्यान रखना, माँ का घर के काम में हाथ बंटाना, पढ़ना और छोटे भाई–बहनों को पढ़ाना । यह सब उसे ही तो करना था । आखिर वह घर की बड़ी और रानी बेटी जो थी । विवाह होने पर विदाई के समय माँ ने सीख दी थी,

''ससुराल में किसी को पलट कर जवाब ना देना । आज तक इस खानदान की किसी बेटी की कोई शिकायत नहीं आई है ।''

उसके लिए वेद वाक्य था, माँ का कथन । आदर्श बहू बनने में कोई कसर कहाँ छोड़ी थी उसने । सबसे पहले उठना, सबसे बाद में सोना, यही उसकी दिनचर्या थी ।... और दिन भर सबके तानों – उलाहनों के बीच भी चेहरे पर मुस्कान और शब्दों में मिठास लिए अनवरत कर्मरत रहना । सब की बात सुनती रही वह, पर उसका पक्ष सुनने की कभी जरूरत ही नहीं समझी गई । ससुरालवालों और पति से तो कोई अपेक्षा ही नहीं थी, पीहरवालों और बच्चों ने भी कभी उसके बारे में नहीं सोचा ।

...किसी ने उसके दिल में झांक कर कभी नहीं देखा । इतनी लंबी घुटन से अब मानसिक बीमारियाँ भी उसे घेरने लगी थीं और शरीर भी साथ नहीं दे रहा था । वह स्वयं से ही सवाल कर रही थी, आखिर कब तक ऐसा होता रहेगा ? उसने मन ही मन निश्चय किया, अब और नहीं, कोई उसके बारे में नहीं सोचता, इस बात पर आँसू बहाने से क्या होगा ? अब वह स्वयं अपने बारे में सोचेगी, अपना सम्मान करना सीखेगी और अपनी जिंदगी में स्वयं रंग भरेगी ।

# सृष्टि के नियम

– श्री. राम कृष्ण रस्तोगी,
गुरुग्राम, हरियाणा

किये है जो कर्म हमने, उन्हीं का फल पा रहे हैं,
बोए है जो पेड़ हमने, उन्हीं के फल खा रहे है ।
चला आ रहा है यह नियम सृष्टि का सदियों से,
उसी को सब लोग संसार में निभाते जा रहे है ।।

आवागमन का नियम सृष्टि का चला आ रहा है,
जो आया है यहाँ वह यहाँ से चला जा रहा है ।
नियम अटल है सृष्टि के उनमें परिवर्तन नहीं है,
जिसको भेजा है यहाँ उसको बुलाया जा रहा है ।।

जिसको मुँह दिया है उसको खाने को दे रहा है,
सबकी नैय्या को भवसागर से वहीं खे रहा है ।
अदृश्य वह है लेकिन वह सबको देख रहा है,
जिसने सब कुछ दिया वहीं सब कुछ ले रहा है ।।

---

# महामृत्युंजय महेश्वरं

–श्री. मोनिका डागा 'आनंद',
चेन्नै, तमिलनाडु

सत्यं सदाशिवं शुभंकरं,
प्रणवं चन्द्रमौलिं सुंदरं,
महाबलिं श्री भीम शंकरं,
त्वं पशुपतिं अखिलेश्वरं ।

अंबिकानाथं ओंकारेश्वरं,
नीलकंठं रूद्रं शंभु शंकरं,
निराकारं च निगुर्णेश्र्वरं,
महाभूतं महापतिं ममलेश्वरं ।

त्र्यंबकं विरूपाक्षं अचलेश्वरं,
रामप्रियं राजराजेश्वरं रामेश्वरं,
त्वं गंगाधरं आनंदं अमृतेश्वरं,
वैद्यनाथं विश्वपतिं विश्वेश्वरं ।

सच्चिदानंदं परमानंदं परमेश्वरं,
भूतगणादिसेवितं त्वं भूतेश्वरं,
करूणाकरं सुख समृद्धिकरं,
शोकादिहरणं श्री तारकेश्वरं ।

वामदेवं नीललोहितं नागेश्वरं,
त्वं अभिरामं शाश्वतं योगीश्वरं,
ईशानं वृषभारूढं नर्मदेश्वरं,
ममनाथं महामृत्युंजय महेश्वरं ।

# लक्ष्य प्राप्तिः चुनौतियाँ और सूत्र

– डॉ. राम गोपाल सिंह बघेल,
पोर्ट ब्लेयर, अ.नि.द्वीप समूह

वस्तुतः सर्वप्रथम प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि पूर्वनियोजित लक्ष्य क्या आसानी से प्राप्त हो जायेगा ???

यदि कभी ऐसा लगे कि लक्ष्य प्राप्त नहीं हो पायेगा तो क्या करें ?

1. पहला सूत्र हिम्मत न हारें और स्वयं को संयत करें ।

2. दिल छोटा न करें ।

3. आपके विषय में किसने क्या कहा ? क्यों कहा ? क्या किया ? क्यों किया ? ये बातें हम सबको तनिक चिंतित तो करती हैं लेकिन इन बातों पर अधिक ध्यान न दें । इन सारे प्रश्नों का माकूल जबाव खोजने और उन पर प्रतिक्रिया व्यक्त करने में बहुमूल्य समय जाया न करें ।

4. अपने आप को बिखरने न दें । स्वयं को संयम से पूरी तरह संभालें और अपनी बहिर्मुखी ऊर्जा को अन्तर्मुखी करें अर्थात अपनी ओर समेटें ।

5. शांतचित्त हों । दोनों आँखें बंद करें । ध्यान लक्ष्य विन्दु पर केन्द्रित करें। पुनश्च हृदय की गहराई से सोचें ।

6. क्या किसी संस्था, संगठन अथवा व्यक्ति ने आपके व्यक्तित्व या आपके लक्ष्य या आपकी कार्य शैली पर कोई उँगली उठाई हैं ? यदि नहीं तो ठीक है । बात को यहीं विराम देवें और यदि हाँ तो फिर यह सोचें कि आपके प्रति किसी और की राय आप बदल सकते हैं क्या ? मेरी समझ से नहीं । तो फिर आपके बारे में किसी गैर की राय बदले या न बदले उसे लेकर हम क्यों दुःखी हों और अनावश्यक बातें सोचकर हम अपना अमूल्य समय क्यों बर्बाद करें ।

**उठो, जागो, अपनी सोच बदलो और अपने लक्ष्यगत काम में लग जाओ ।**

# उपनिषदों में शिव का महत्व

– डॉ. संदीप कुमार,
लखनऊ, उ.प्र.

उपनिषद वेदों का ज्ञानकांड हैं जहाँ परम सत्य, आत्मा और ब्रह्म की खोज की जाती है । यद्यपि उपनिषदों में स्पष्ट रूप से ''शिव'' का नाम बहुत अधिक बार नहीं आता, परन्तु उनके स्वरूप, तत्त्व, ध्यान, और निराकार ब्रह्म के प्रतीकों में शिव की उपस्थिति व्याप्त है ।

'शिव' को यहाँ एक तत्त्व, परम ब्रह्म, योग के अधिष्ठाता, और मौन/शांति के प्रतीक के रूप में देखा जाता है ।

''एको हि रुद्रो न द्वितीयाय तस्थुर्य इमाँल्लोकान... शिवो मे अस्तु सदा शिवोमिति ।।'' यह श्वेताश्वतर उपनिषद (6.11) का श्लोक शिव को ''एकमेव अद्वितीय'', सर्वलोक-नियंता, दुख-हर्ता, कालातीत, और सर्वशक्तिमान कहता है । रुद्र का तात्त्विक रूप यहाँ शिवतत्त्व के रूप में उभरता है, जो सगुण और निर्गुण दोनों से परे है ।

शिव को श्वेताश्वतर उपनिषद (3.8) ''यो देवानां प्रभवश्चोद्भवश्च...'' के अनुसार समस्त देवताओं का मूल, काल का कारण, और प्रकृति का स्रष्टा कहा गया है ।

वे स्वयं काल हैं, और फिर भी कालातीत हैं । यह शिव की परम निरपेक्षता दर्शाता है ।

शिव, उपनिषदों में योग और आत्मज्ञान की पराकाष्ठा के रूप में देखे जाते हैं । वे योग के प्रथम गुरु (आदियोगी) हैं, जिनसे ज्ञान परंपरा की शुरुआत होती है (यह परंपरा विशेषतः नाथ और तांत्रिक दर्शनों में विस्तारित होती है) ।

उपनिषदों में शिवतत्त्व के लक्षण के लिए, श्वेताश्वतर उपनिषद एकत्व, रुद्र, त्रिगुणातीत कहता, माण्डूक्य उपनिषद में प्रत्यक्ष नाम नहीं पर तात्त्विक रूप से तुरीय अवस्था – जो शिवतत्त्व कहा गया है । बृहदारण्यक उपनिषद में नेति-नेति ब्रह्म – जो शिव का निराकार स्वरूप है, कहा गया है । उपनिषदों में शिव एक देवता नहीं, अपितु एक तत्त्व है,

वे निर्गुण ब्रह्म हैं – जो ''नेति नेति'' से परिभाषित है । इस प्रकार, उपनिषदों का ''शिव'' वह सार्वभौमिक सत्य है, जो 'ज्ञान', 'ध्यान' और 'मोक्ष' की प्रत्येक प्रक्रिया का अंतिम ध्येय है ।

## नहीं आपस में लड़ना

– श्री. राजेन्द्र लाहिरी,
पमगढ़, छत्तीसगढ़

अंधे आप भी हैं और अंधा मैं भी हूँ,
इंसानियत समझ ही नहीं पा रहे तो
दोष आपको दूँ या फिर खुद को दूँ,
कोई दूर बैठे पासा फेंक चाल चल रहा है,
हमारे मस्तिष्क पर कब्जा कर
हम दोनों को छल रहा है,
छल से अनजान हम दोनों लड़ रहे हैं,
अपने ही अंत की ओर शनैः बढ़ रहे हैं,
क्या इतने गंवार या अनपढ़ हैं जो
समझ ही नहीं पा रहे मक्कारों की मक्कारी,
उनके बताये अनुसार ही निभा रहे दुनियादारी,
असल में हम अनभिज्ञ हैं अपने आप से,
दूर चले जा रहे अपने ही समाज से,
और प्रेरणा नहीं ले रहे गौरवशाली इतिहास से,
जुड़ गए हैं अपने आप की विनाश में,
वरना मुट्ठी भर कुछ लोग
हमारे सिर पर नहीं बैठते,
हमारा ही सब कुछ होने के बाद भी
अकड़ दिखा नहीं ऐंठते,
हम प्रकृति के बाशिंदे सबसे चार कदम आगे हैं,
नींद में होकर भी आये रहते जागे-जागे हैं,
शत्रु की नजर हमेशा हमारी कमजोरी पर है,
वे हमसे सतर्क पर सीनाजोरी पर हैं,
क्यों ? आखिर ऐसा क्यों ?
सतर्क रहना होगा यदि आगे बढ़ना है,
न कि विरोधियों को बढ़ा आपस में लड़ना है ।

## राम गुण गाइए !

– श्री. मानसींग पारगी 'मान',
दाहोद, गुजरात

चिंता सब छोड़कर,
दोनों हाथ जोड़कर,
आँखें दोनों मूँदकर,
राम रूप ध्याइए ।

राम नाम रटक़र,
रोज कुछ कामकर,
भाव ऊर भरकर,
राम धून गाइए ।

काम क्रोध मारकर,
लोभ मोह त्यागकर,
मन को ही मित कर,
राम पास जाइए ।

प्रातःकाल उठकर,
तन मन शुद्ध कर,
दीप दान धूप कर,
राम गुण गाइए ।

## मन का दर्पण

– श्रीमती. अनुराधा. के,
मंगलूरु, कर्नाटक

भावनाओं का सम्यक प्रवाह है कविता ।
अंतः सरिता का सदा बहाव है कविता ।
संवेदना का नित जमाव है कविता ।
यूँ कहें कि, भावोत्कर्ष का आभास है कविता ।
आत्म चेतना का स्पंदन है कविता ।
सुप्त वेदना का क्रंदन है कविता ।
सांत्वना का शीतल चंदन है कविता ।
यूँ कहें कि, मन का नित दर्पण है कविता ।
रस, अलंकार, छंद का अनुभाव है कविता ।
अतुकांत, छंदमुक्त उन्मुक्त मनोभाव है कविता ।
कवि मस्तिष्क की सहज स्वभाव है कविता ।
यूँ कहें कि, अनुभूति की अभिव्यक्ति है कविता ।
भाव प्रवणता का सम्यक आगार है कविता ।
वास्तव व कल्पना का उजागर है कविता ।
समष्टि की सम्यक भाव संचार है कविता ।
यूँ कहें कि, मन के गागर में समा कल्पना सागर है कविता ।
समाजोन्मुखी मनोकामना है कविता ।
कल्पनाओं की सहज आईना है कविता ।
माता वागीश्वरी की उपासना है कविता ।
यूँ कहें कि, ज्ञान गंगा का अविरत धारा है कविता ।

## भारत देश महान !

– श्री. मानसींग पारगी 'मान'

भारत में तीनों ऋतुओं का,
है अनुकूल परिवेश ।
विभिन्नता में भी एकता का,
है विशेष संदेश ।
अपनी प्रतिभा खुद निखार के,
हम भी बनें महान ।
सूर्य चंद्र–सा चमकेगा फिर,
भारत देश महान ।।

## शंकर भोले नाथ !

– श्री. मानसींग पारगी 'मान',
दाहोद, गुजरात

देवों के भी देव है,
उमापति भूतनाथ ।
त्रिपुरारी जटाधर,
शंकर भोले नाथ ।।
शिवालय में गूँज रहा,
हर हर भोले नाद ।
हे गंगाधर डमरुधर,
शंकर भोले नाथ ।।

## ये मेरा जीवन है एक संग्राम निरत

– डॉ. रुरुकुमार महापात्र,
तिरुपति, आंध्र प्रदेश

ये मेरा जीवन है एक संग्राम निरत
जैसे रामायण और महाभारत
ये मेरा जीवन है एक संग्राम निरत
जैसे रामायण और महाभारत
इस में मैं हूँ राम–लक्ष्मण और विभीषण
सुग्रीव और हनुमान् का निदर्शन
अगर ये जीवन है कुरुक्षेत्र
संग्राम महाभारत
तो मैं हूँ हो कुशल योद्धा अविरत
गाण्डीव धनुर्धारी अर्जुन तीरन्दाज
जीवन जुआ में हारा हूँ मैं जो युधिष्ठिर
तो जिता भी हूँ ज्ञान ध्यान संवित् सरोवर ।।
भीम जैसा में विषय विष को पी लिया
और अरिन्दम वनके जीवन हर्ष से जी लिया ।।
नकुल सहदेव जैसा मैंने जीवन को जो सम्भाला
करके अपना हित सबका भी किया बहुत भला ।।
कर्ण में रहा कृष्ण में रहा करके अभ्युत्थान
भीम अर्जुन जैसे पाया उत्थान
तो रहा युधिष्ठिर जैसा प्रज्ञावान
मान हूँ अभिमान हूँ अभिमन्यु जैसा मेरा जीवन संग्राम
परीक्षित में रहा पाने को भगवान
जीवन है मेरा जैसे रामायण–महाभारत का यशोगान
तो हे प्रभु कृपानिधान
जीवन को मेरा कर दो सफल देकर मान सम्मान
भर दो मेरी झोली कर दो पार
हे भगवान्
मेरे जीवन को दे दो स्थिर आसन
करता रहूँ तुम्हारा गुणगान
हे भगवान्, हे भगवान्
हे भगवान्, हे भगवान् ।।

## कागज ने लेखनी से कहा

– डॉ. पुष्प कुमार राय,
भागलपुर, बिहार

कागज ने लेखनी से कहा –
क्यों काँप रही हो,
सहमी लग रही हो,
बेबाक चलनेवाली
क्यों बेबस दिख रही हो ?
निर्भीकता तुम से है
बेबाकपन तुम से है
पर क्या वह वजह है
मूक–बधिर दिख रही हो ।
स्वतंत्रता तेरी पहचान
निष्पक्षता का अभिमान
दबाव में दबी हुई
गुलाम दिख रही हो ।
स्पष्टता कहाँ खो गई
क्या लोभ मोह में फँस गई
कर्तव्य से विमुख
क्यों गलत राह चल रही हो ?

## हरिहरब्रह्म

– श्री. महेश कुमार (हरियाणवी),
महेन्द्रगढ़, हरियाणा

भला करने ही वालों की, भलाई याद करते है ।
बचाने आप आएँगे, यही फ़रयाद करते हैं ।

तुम्हीं हो लाज के साथी, तुम्हीं हो दीप की बात्ती
तुम्हीं से आस जीवित है, तुम्हीं हर सांस के साथी ।

तुम्हीं हो राह जीवन की, तुम्हीं से चाह जीवन की
तुम्हारे नाम से महके, बहारे आप उपवन की ।।

हुई जो भूल मिटाने को, दया का दान करते हैं ।
बचाने आप आएँगे, यही फ़रयाद करते हैं ।

तुम्हीं हो भोज की थाली, तुम्हीं मुसकान के माली ।
तुम्हीं हो प्रेम चंदा का, तुम्हीं हो भोर की लाली ।

तुम्हीं हो महकती वादी, तुम्हीं हो शब्द संवादी ।
तुम्हारी शरण में आकर, मिटे हर पाप उन्मादी ।

मिला सब ज्ञान जिनसे है, उन्हीं का ध्यान करते हैं
बचाने आप आएँगे, यही फ़रयाद करते हैं ।

तेरा अरमान जीवन में, रहे अहसान जीवन में ।
बने हम पुष्प की डाली, इसी इंसान जीवन में ।

हमें है चाह बस तेरी, चलेंगे राह बस तेरी
दयानिधि आप हो स्वामी, फिक्र जिसको सदा मेरी ।

नए नव कल्प उगाने को, ब्रह्म का ध्यान करते हैं ।
बचाने आप आएँगे, यही फ़रयाद करते हैं ।

## गीत

– श्री. मनोहर सिंह चौहान मधुकर,
जावरा, रतलाम, म.प्र.

मैंने जब देखा तुझे, मन ने यही कहा है ।
हूँ कन्हैया तेरा मैं, तू ही मेरी राधा है ।।
तू हसे तो फूल झरे, चाल चलें तब पवन चले ।
नयन को ठंडक पहुँचे, तू जो मुझे आन मिले ।।
तुझको चातक-सा तकते, प्रेम की एक बूँद मिले ।
प्रेम निर्मल निश्चल है, ये जिसकी न थाह मिले ।।
आ बंधन सब तोड़ के, प्रिय तुझ बिन जीवन आधा है ।
सूरज संग आँख मूँदू, चंदा तारे संग जागूँ ।
तुझे पाने की हित कहूँ, ईश से भी लड़ भागूँ ।।
सुबह तेरी साँसों-सी, हर शाम शहद बातों सी ।
भूल न पाऐ हम सजनी, तु है मीठी यादों सी ।।
मान ले मुझको अपना, ये मीत सीधा साधा है...
प्रभात में किरण आई, लगा मुझे तू मुस्काई ।
पत्तों की ताली पर लगा, तूने झाँझर झंकाई ।।
तेरी आहट राहों में, इस मन को खुश करती है ।
दिल धड़के प्रिय नाम से, सतत ये सास चलती हैं ।।
छोड़ जगत गर तू आए, मिटेगी सब बाधा है...

## न्यू इंडिया गीत

– श्री. नलिन खोईवाल, इंदौर,म.प्र.

सबसे प्यारा है जग में ये न्यू इंडिया ।
सबसे न्यारा है जग में ये न्यू इंडिया ।।
चाँद सूरज है ये धरती आकाश है ।।
नभ का तारा है जग में ये न्यू इंडिया ।।
है ख़ुदा का तो वरदान दुनिया में ये ।
नभ से उतरा है जग में ये न्यू इंडिया ।।
जिंदगी है हमारी ये आराधना ।
इससे संवरा है जग में ये न्यू इंडिया ।।
ये चमकता रहे रोशनी-सा सदा ।
इक शरारा है जग में ये न्यू इंडिया ।।
डूबते का किनारा है रक्षा भी है ।
इक सहारा है जग में ये न्यू इंडिया ।।
सबसे आगे है कोई नहीं इस जैसा ।
सिर्फ मेरा है जग में ये न्यू इंडिया ।।
जगमगाता रहे ये फलक में सदा ।
इक सितारा है जग में ये न्यू इंडिया ।।
बस गई धड़कनों में भी इसकी महक ।
गुल बहारां है जग में ये न्यू इंडिया ।।
बस गई है नज़र में हसीं वादियाँ ।
इक नज़ारा है जग में ये न्यू इंडिया ।।
गंग जमनी है तहज़ीब इसकी मगर ।
कर्म धारा है जग में ये न्यू इंडिया ।।
ऐ नलिन इसपे आईं मुसीबत कईं ।
कब न हारा है जग में ये न्यू इंडिया ।।

## क्यों होते हो निराश अभी से

– श्री. अशोक पटेल 'आशु',
शिवरीनारायन, छत्तीसगढ़

क्यों होते हो निराश अभी से
क्यों होते हो हताश अभी से
अभी तो तुमने चलना सीखा, कदम बढ़ाना बाकी है
अभी तो तुमने गिरना सीखा, छलांग लगाना बाकी है ।

तू ही तो हौसले की खान है
तू दृढ है तेरी दृढ़ता महान है
एक बार कोशिश तो कर, तेरा जज्बा अभी बाकी है
संकल्प कर ले कमर कस ले, एक दांव तेरा बाकी है ।

तुझमें वो, असीम हौसला है
तेरा विश्वास नहीं खोखला है
तेरे मन में विश्वास की, पक्की जीत अभी बाकी है ।
तेरा आखिरी हथियार, आत्मविश्वास अभी बाकी है ।

तेरे इरादे सख्त व, बुलंद है
तेरे अंदर में शक्ति अनंत है
तुझमें है शक्ति आसमान की ऊँचाई नापना बाकी है
तू समंदर भी नाप लेगा वो वजूद का असर बाकी है ।

---

## देवता
### (सॉनेट)

– प्रॉ. विनीत
मोहन औदिच्य,
सागर, म.प्र.

जो अव्यक्त था, वह मौन भी था ।
न जाने...वह पथिक कौन था ?
था वह विश्वास से परे, काल्पनिक ।
चला गया जीवन से आकस्मिक ।

किसी भी प्रश्न का उत्तर था नहीं ।
अकेलेपन की भीड़ में वह था यहीं ।
चलता नियमों के सर्पिल पथ पर ।
अदृश्य आलिंगन में सदा रह कर ।

उन्मुक्त हो नहीं पाता यह बाहुपाश
बंधनों के पर्वतों में वह हो निराश ।
सुबह की लालिमा में प्राण आश्रित ।
साँझ होते ही मन की नाव सहित ।

कौन था वह ? राजा या महानायक ?
प्रासादों के पत्थरों में जीवित गायक ?

## मन

– श्री. रवि कान्त,
जौनपुर, उ.प्र.

कितना अनोखा होता है ना,
ये मन का बंधन...
मन के रिश्तों का ना कोई नाम होता है,
ना ही कोई बंदिश...
सात फेरों की तरह इसमें नही बनाया जाता
अग्नि को साक्षी...
ना ही इसे निभाने के लिए कोई सात वचन
लिए जाते हैं...
ये बंधन तो बिल्कुल मुक्त होता है,
बहती हवा-सा... महकते इत्र सा,
जो अनायास ही जुड़ जाता है किसी से,
इस कदर बंध जाता है कोई मन की डोर से,
कि मन तलाशने लगता है इस भीड़ में...
उस नाम को, उसके लिखे हुए शब्दों को...
और उन्हें पढ़कर ढूँढ लेता है
अपने मन के सुकून को...
यही तो है मन का बंधन...
जिसमें ना किसी को बांधने की हसरत,
और ना ही किसी को छोड़ने का मन...
महसूस करके देखना.. आपके पास भी
होगा,
एक ऐसा ही बंधन... एक ऐसा ही मन...
रिश्ता रूह का

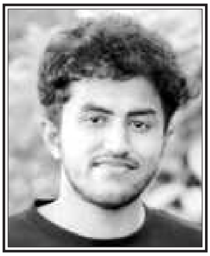

## बचपन

– श्री. मोहित.जे.
संतोष, श्री रामकृष्ण
कॉलेज ऑफ आर्ट्स
एंड साइंस, कोवै,
तमिलनाडु

जब खेल का फिक्र था कल की नहीं
जब अंकों का डर था अभिमान का नहीं
न कभी किसी से जलते थे ना ही नफरत
ऐसा ही था हमारा बचपन ठहरा वह
मनोहर ।

सपनों की दुनिया में डूबे हुए थे हम
कार्टून के राज्य के महान राजा थे हम
दिल हमारा था बेगुनाह तथा बेपरवाह
दिन रात मिलता था प्यार हर ओर हर
तरह ।

पवित्र थे हमारे विचार स्वभाव
विचित्र थे हमारे मनोभाव तब
खुलकर जीते थे तब हम सस्नेह
जीवन को पाते थे सुखतम सुंदर ।

दिल तो हमारा बच्चा है यार
आज भी वह बच्चा ठहरता यार
मन को जब मासूम महसूर करते
जीवन तब खिलता है खुशियाँ भरते ।

# पोर-पोर मचल उठा

– डॉ. परमानन्द लाभ,
समस्तीपुर, बिहार

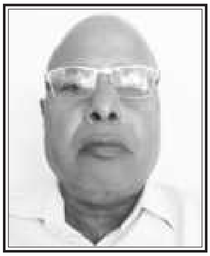

पोर–पोर मचल उठा अंग–अंग फड़क उठा
दिल की धड़कनें धमनियों में आ गईं
धड़क उठीं नसें उँगलियाँ सिहर उठीं
दूर पेड़ की ओट से कोई इशारा कर रहा
शाम की धुंधली रोशनी में मन्द–मन्द पवन बह रहा
फिर किसी के बुलावे ने जब आगोश में लिया
तब चला पता मुझे प्रेम का साया शून्य में कैसे समा गया
जानी–पहचानी वह अदा दिल में उतरती चली गई
तब पता चला कि क्यों मन यूँ गुनगुना रहा
क्यों निकल पड़ा गुनगुनाने में ये धुन
ऐसे हीं पलों में उम्र मेरी पीछे खिसक गई जवानी याद आ गई
समय की चोट खाये तन के अंदर पर मन बेअसर रह गया
भोगता चिरयौवन को मन उड़ता कभी–कभार है
चाहे पंछी उम्र का 'लाभ' उड़ान भरे–ना–भरे ।

# पेड़

– श्री. अशोक आनन,
शाजापुर, म.प्र.

पेड़ !
हमारी साँसें हैं ।
इनसे –
दिल धक–धक करता ।
जीवन –
खुशियों से भरता ।
इनसे –
पूरी आसें हैं ।
पेड़ –
कभी न काटें हम ।
वन –
शहर में न बांटें हम ।
पेड़ –
बिन हम प्यासे हैं ।
इनसे –
हरियाला जीवन ।
हरा–भरा –
रहता है मन ।
पेड़ –
बिन सब रुआंसे हैं ।
जीवन की –
ये खुशियाँ हैं ।
इन बिन –
गीली अंखियाँ हैं ।
पतझड़ –
केवल झांसें हैं ।
पेड़ नहीं –
तो हम नहीं ।
खुशियाँ –
इनके हाथ रहीं ।
जीवन के –
ये पांसे हैं ।

## आदतें बन ही जाती हैं...

– डॉ. वीरेन्द्र प्रसाद,
पटना, बिहार

किसी का मुसकराना, किसी का उस पर मर जाना
अजीब हैं ये रवायतें, आदतें भी अजीब होती हैं
आदतें बन ही जाती हैं, जो दिल के करीब होती हैं ।

आदतें ऐसी जैसे सौंधी सुगंध साँसों में बस जाती
बीते समय की रेख नजरों में उभर–सी आती
न होके भी पास मेरे, रगों में लहू बन दौड़–सी आती
मानस पक्षी के उड़ने की, अजब तरकीब होती है
आदतें बन ही जाती हैं, जो दिल के करीब होती हैं ।

कौन आता बार–बार, स्वप्न में मुझको जगाने
बींधकर बंकिम नयन से, धार वारुणी के बहाने
याद में तनु स्पर्श के है मुझे युग–युग बिताने
चेहरे का लम्स भी, उनके रूह की रकीब होती है
आदतें बन ही जाती हैं, जो दिल के करीब होती हैं ।

---

## मैं उन्हें नहीं जानता

– श्री. मनु प्रताप सिंह शेखावत,
झुंझुनूं, राजस्थान

मैंने दुःखी इंसान को देखा,
मैं उस इंसान को नहीं जानता,
मैं उसके दुःख को जानता हूँ ।

मैंने मनुष्य को खुशी से हँसते देखा,
मैं उस इंसान को नहीं जानता,
मैं उसकी खुशी को जानता हूँ ।

मैंने एकाकी व्यक्ति को देखा,
मैं उस व्यक्ति को नहीं जानता,
मैं उसके अकेलेपन को जानता हूँ ।

मैंने देखा भिखारी को रास्ते किनारे,
अब भी मैं उसे नहीं जानता,
मैं उसकी गरीबी को जानता हूँ ।

मैंने दौड़ते गिरते व्यक्ति को देखा,
मैं उस व्यक्ति को नहीं जानता,
मैं उसके संघर्ष को जानता हूँ ।

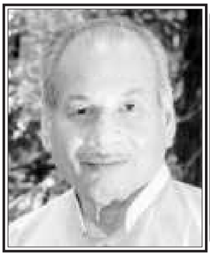

# सत्य कर्म - सत्य ही धर्म

-श्री. कर्नल आदि शंकर मिश्र
'आदित्य', लखनऊ, उ.प्र.

सत कर्म करो, सत धर्म धरो,
जग जीवन में उपकार करो ।
सत कर्म करो, सत धर्म धरो,
जन जीवन पर उपकार करो,
युग निर्माण, प्रगति के पथ पर,
उत्सर्ग रहित, उत्कर्ष करो,
धरती से लेकर, अम्बर तक,
निर्भय बन कर, सब धवल करो,
उत्तुंग शिखर पर चढ़ना है,
कदम उठा कर, निडर चढ़ो ।
सत कर्म करो, सत धर्म धरो,
जन मानस पर उपकार करो ।

सत्कर्म किया, सतधर्म जिया,
जग में जनमा, उपकार किया,
माता का अनुपम प्यार मिला,
तो नर सुशील बन पाया मैं,
पुण्य कर्म पाया जो पिता से,
इस जग में कुछ बन पाया मैं,
कुल की कुलीनता पाकर मैं,
शाश्वत कुलीन बन पाया मैं,
उस कुल की उदारता पाकर,
खुद भी उदार बन पाया मैं ।

निज कृत कर्म पुण्य पा करके,
खुद भाग्यवान बन पाया मैं ।
सत कर्म करो, सत धर्म करो,
जग को पाकर उपकार करो ।
माता-पिता का अनुशासन,
जीवन में सदा अलौकिक है,
गुरुओं से ज्ञान प्राप्त करके,
गोविंद को पाना निश्चित है,
जब चले हथोड़ा सोने पर,
आभूषण बन कर शृंगार करे ।
यह अनुशासन इस जीवन में,
नर नारायण को भी मिलवा दे,
सत कर्म करो, सत धर्म धरो,
जग में आकर उपकार करो ।

जब निर्माण किया ईश्वर ने,
सब कुछ इंसान को दे डाला,
पर एक वस्तु गिर गई हाथ से,
प्रभू के पैरों ने छिपा डाला,
जब सारे मानव चले गये,
माता लक्ष्मी ने प्रश्न किया,
क्या छिपा लिया है चरणों में,
क्या इंसानों को नहीं दिया,
हँसकर प्रभु माता से बोले,
चरणों के नीचे शान्ति छिपी,
शान्ति प्राप्त करने की ख़ातिर,
पृथ्वी पर इंसान हमेशा तरसेगा,
थककर और हारकर मानव,
फिर मेरी ही शरण में आयेगा,
मेरे श्री चरणों में ही आकर,
आदित्य शान्ति वह पायेगा ।
सतकर्म करो, सतधर्म धरो,
जग में जी कर उपकार करो ।

# सनातन की वाणी

– श्री. सुव्रत दे,
सम्बलपुर, उड़ीसा

मैं शून्य की गोदी में जन्मा,
नाद से पहले जो स्वर था,
मैं वही सनातन पुकार हूँ,
जिस पर ऋषियों की नजर था ।

न मैं किसी पंथ की सीमा में बँधा,
न किसी काल की कड़ियों से रुका,
मैं यज्ञ की अग्नि में निरन्तर दहा,
मैं तुलसी के पात में युगों से व्रत बनकर टिका ।

मैं वेदों की मौन ऋचा हूँ,
जिसे सिर्फ श्रुति से जाना गया,
न शब्दों में बाँध सके कोई मुझे,
न तर्कों से दूर किया गया ।

मैं वह धर्म नहीं,
जो दीवारों में बँट गया,
मैं वह मर्म हूँ,
जो हर कण में डंट गया ।

मेरी गोद में राम ने मर्यादा ओढ़ी,
कृष्ण ने लीलाओं से जीवन को जोडी
शिव ने मौन साधना से सिखाया,
कि संहार भी कभी–कभी करुणा दिखाया ।

मैंने नहीं कहा – डरो,
मैंने कहा – जानों स्वयं को,
मैंने नहीं बाँधा – पूजा में,
मैंने कहा – हर श्वास में है ब्रह्म को खोजो ।

जब–जब समय ने विकृति ओढ़ी,
मैंने स्वयं को शास्त्रों में सँवारा,
महाभारत के रक्त में भी,
मैंने गीता का दीप जलाया सारा ।

मैं कोई बीता हुआ इतिहास नहीं,
मैं हर दिन, हर क्षण तुम्हारे साथ हूँ,
तुम ॐ के कंपन में खोते हो,
मैं तुम्हारे अंतःकरण से जाता हूँ ।

अब तुम पूछते हो, क्या मेरा अस्तित्व बचा है ?
मैं हँसता हूँ – क्या आत्मा कभी मरी है ?
जो अग्नि, जल, वायु से बना है तू,
उसके मूल में ही सनातन भरी है ।

**SHABARI SIKSHA SANSTHAN**
Shabari Palace, 193, Second Agraharam, Salem - 636 001.
& 0427-4265414 0427-4552100
Visit us @ https://shabari.in

# A glance about Vani Vikas

## Answers for the Frequently Asked Questions.....

**Application forms for Vani Vikas Exams will be issued only to the members of Shabari Siksha Sansthan. Annual membership fee Rs.100/-**

**Why Vani Vikas exams are conducted ?**

The name **Vani Vikas** itself explains us clearly that, Vani Vikas is to motivate the non Hindi speakers to speak in Hindi.

**Who conduct the Vani Vikas exams ?**

The Vani Vikas exams are conducted by **SHABARI SIKSHA SANSTHAN**.

**Is Vani Vikas, written exam or oral exam (Vivavoce) ?**

Vani Vikas exams motivate the students to speak Hindi, this is not a written exam.

**What is the minimum age limit for Vani Vikas exam ?**

One who has completed 8 years shall appear for the exam. Those who are participating in the Vani Vikas first level must attach the Xerox copy of the birth certificate.

**What is the basic educational qualification for Vani Vikas exam ?**

There is no basic educational qualification for Vani Vikas exam, self-interest is enough.

**During which months that Vani Vikas exams are conducted ?**

Vani Vikas exams are conducted in January, April, July and October.

**How many levels are there in Vani Vikas exam ?**

The Vani Vikas exam consists of EIGHT levels.

**Is there any separate text book for Vani Vikas exam ?**

Yes, Vani Vikas exam consist of seperate text books for all the EIGHT levels.

**Is it must to take part in Vani Vikas exam level by level ?**

Yes, you are suppose to do this exam level by level only. You can't do more than one level at the same time, in the same way you can't able to apply directly to second level or any other level. Those who apply for second level to eighth level must enter the 10 digit register number (passed previous exam number) in the exam application form.

**Can we know about the exam centres for Vani Vikas ?**

If you have 30 students to appear for the exam you will have your own centre. If the students number (count) is between 10 to 29 you have to pay rupees 500 as exam centre charge. **In your centre few more students from outside may join with you without any prior information from us**. The PAID exam centre charge will never be returned.

A minimum 10 students must be there for a Batch or Term to apply for Vani Vikas Exam (January or April or July or October).

**Does the Vani Vikas exam have the mark list and certificate ?**

Within 30 days after the exam you will receive the mark list and within 60 days after the exam you will receive the Certificate. Results will be published in https://shabari.in.

**Who will conduct the Vani Vikas exam ?**

Experienced and efficient teachers will conduct the Vani Vikas exam.

**Is there any sample questionnaire for Vani Vikas exam ?**

Model question papers are at the end of the Vani Vikas text book.

**Is Vani Vikas worth for students ?**

By improving Hindi it is going to be definitely useful for the students and for their future carrier.

**Details of the books :**

| Name of the Exam | Book |
|---|---|
| Vani Vikas Grade - 1 | ₹ 250.00 |
| Vani Vikas Grade - 2 | ₹ 260.00 |
| Vani Vikas Grade - 3 | ₹ 270.00 |
| Vani Vikas Grade - 4 | ₹ 280.00 |

| Name of the Exam | Book |
|---|---|
| Vani Vikas Grade - 5 | ₹ 290.00 |
| Vani Vikas Grade - 6 | ₹ 300.00 |
| Vani Vikas Grade - 7 | ₹ 310.00 |
| Vani Vikas Grade - 8 | ₹ 320.00 |

Kindly pay the Vani Vikas books charges only through our web portal @ **https://shabari.in**

**A minimum 10 students must be there for a Batch or Term to apply for Vani Vikas Exam (January or April or July or October).**

महान संत शिव भक्त – तमिल नायनमार

# नमिनंदीयडिगल नायनार

– विद्या सागर आर.जे. संतोष कुमार, कोवै, तमिलनाडु

जा निकल आगे बढ़ अरे चले जा तुझे कुछ नहीं मिलेगा
कह देते ऐसे भी तो कोई चिंता नहीं परेशानी भी नहीं होता
उसके लिए क्या दीप जलाना है बताओ क्यों जलाना है
जिसके हाथ में आज का कटोरा बना रहता है
उसके लिए कि क्यों दें हम निकल जा तुम निकल जा
पानी मिलेगा उसे तालाब में जला ले दीपक तुम उसी से
शिव मंदिर में दीप जलते की माँगने गए थे शिव भक्त
भगा दिए थे उसे पानी से जलाने को कहकर वहाँ के जैन ।

दिल टूट गया था बिलकुल दुख भरा गया था भर गयी व्याकुलता
बिन जाने ही चले गए थे शिव भक्त चयन लोगों के उस घर में
मना करने का भी एक तरीका होता है, है ना इस जग में ?
मंदिर में आकर अपना सिर टोके आँखों से बहने लगे आँसू
दीप जलाने का मान्यता लेकिन पानी से वह क्यों जलता ?
सुनने को मिली एक अशरीरी तब आकाश से सुने संत भी
उठो चलो अब उस तालाब से पानी तुम लेकर आओ
डरने की कोई भी बात नहीं है तुम चिंताहीन होकर दीप जलाओ ।

एमप्पोरुर नाम था उसे नगर का भाग था वह चोल राज्य का
रहते थे वहाँ एक ब्राह्मण भजते थे शिव को दिन रात समन
नाम था उस दिव्य आत्मा का नमिनंदीयडिगल नायनार
हर रोज सुबह जाते ये तिरुवारूर, शिव सेवा में लगे रहते
हर शाम वहाँ के अरनेरी मंदिर में पानी भरकर ये दीप जलाते
यह देखकर जैन साहित्य सब लोग अचरज में पड़ जाते
पानी डालकर दीपक जलाना मुमकिन है क्या ? वे मुँह खोल लेते
शिव के प्रति से भरे नमिनंदीयडिगल नायनार जलाते रहते ।

हर रोज का यह कम बन गया सुबह जाते तो रात को वापस घर आते
घर में नहा कर शिवार्चना करके फिर भोजन कर सो जाते
जब दिया जलने लगा तेल के बिना पानी से ही वह जलने लगा
कीर्ति चारों ओर फैलने लगी, राजा तक बात वह पहुँच गयी
राजा स्वयं आए वहाँ मंदिर के दर्शन कर अपने आप को धन्य माने
धूमधाम से उत्सव का आयोजन कर शिव की भक्ति अपनाये
तिरुमनली में उत्सव के दिन में सारी जनता मिलकर शिव के गुण गाए
शिव भक्ति से अपने आप को सजाकर जन्म को धन्य माने ।

वापस जब घर आए घर के अंदर नहीं गए नमिनंदीयडिगल नायनार
पति को घर के पीछे देखकर पूछने लगी, स्वामी अंदर क्यों नहीं आए
उत्सव में आए थे सब जात के अनेक लोग इससे बन गया दोष
नहाने का पानी लाओ करो इसका प्रबंध नहा के आऊँगा तुरंत
आयोजन करने अंदर चली गई पत्नी उनकी बाहर ही रह पाए
एक छोटी-सी नींद में डूब गए अपने आप को नायनार भूल पाए ।

नींद में आई थी उनको एक सपना महादेव आए एक बात सुनाएँ
तिरुवारूर में जो भी रहते हैं सब मेरे अपने गण के बराबर हैं
नींद खुल गई नहा कर शिव की पूजा कर नायनार सोचने लगे
सबको छूने को दोष मानकर जो भाव मन में लाया गलत रहा
भेदभाव के वह सोच उनके दिल को कुछ देर भेदता रहा
दूसरे दिन जब वह मेले में गए लोगों को वहाँ वे ध्यान से देखने लगे
सब लोग लग रहे थे देव रूपी अपना हाथ ऊपर उठकर नमन किये
बाद में जब देखने लगे तब सब साधारण लगने लगे ।

भक्तों में क्या भेदभाव है सब लोग महादेव को माननेवाले हैं
भक्ति की शक्ति जब बढ़ती तब शिवचरण पानेवाले हैं
तिरुवारूर में रुक गए शिव पूजा वे करते रहने लगे
शिव महिमा का गायन कर करके शिव में वे डूबने लगे
शिव भक्तों की सेवा वही रही उनकी जीवन की एक आभा
शिव शिव हर हर कहते फिरते शिव मंत्र का उच्चारण करते-करते
शिव की कृपा से शिव में मिलने का प्रयास ये करते रहे
शिव चरण प्रकार शिव उसी में मिलकर शिव आत्मा ये बन गए ।

***नमिनंदीयडिगल महान, भक्ति से भरा सुमन ।***
***नीर से दिया जलाकर, खिलाये भक्ति सुमन ।।***

# नीलकंठ

– श्री. सुशील शर्मा, नरसिंहपुर, म.प्र.

*(शिव के विषपान प्रसंग पर)*

वह क्षण
जब देव भी भयभीत थे,
और असुर भी मौन ।
समुद्र मंथन की गर्जना
मानवता के रोमकंप के समान
हर दिशा में फैल रही थी ।

दाह था,
ध्वंस था,
विष की ज्वाला में जलता था ब्रह्मांड ।
वह हलाहल
जिसका स्पर्श ही मृत्यु था
उसे देखकर
इंद्र पीछे हटे,
विष्णु ने मौन ओढ़ लिया,
और ब्रह्मा ने आँखें मूँद लीं ।

तब वह उठे
शिव ।
ना उत्सव की मुद्रा में,
ना चमत्कारी अर्घ्य के साथ,
बल्कि
एक सरल संन्यासी की भांति
जिसके नेत्रों में समर्पण था,
और मुख पर एक निर्विकार तटस्थता ।

क्योंकि
उन्हें न सिंहासन चाहिए था,
न स्तुति, न विजय ।
उन्हें चाहिए थी
सृष्टि की शांति ।
उनके लिए
सभी जीव बराबर थे
देव, दानव, जीव, वनस्पति ।

उन्होंने उठाया वह विष,
उस हलाहल को
जो सबकुछ भस्म कर सकता था ।
न वह झिझके,
न किसी से पूछने रुके ।
बस
अपने भीतर समा लिया
काल का वह विद्रूप स्वरूप ।

गला नीला पड़ गया
नीलकंठ कहलाए ।
पर विष गले में ही अटका रहा,
न उसने हृदय को छुआ,
न मस्तिष्क को
क्योंकि शिव जानते थे
विष को कहाँ रोकना है ।

वे पी गए वह
जिसे कोई छू भी न सका
और फिर भी
उनकी आँखों में
दया की वही उज्ज्वल चमक थी ।
कंठ नीला था,
पर हृदय वैसा ही निर्मल ।

नीलकंठ
एक प्रतीक है,
उस त्याग का

जो बिना किसी अपेक्षा के किया जाता है।
वह संकल्प
जो किसी मंच से नहीं बोला जाता,
बल्कि
मौन में निभाया जाता है।

वे देवों के देव नहीं इसलिए बने
क्योंकि वे पूजे गए,
बल्कि इसलिए
क्योंकि उन्होंने वह उठाया
जिसे सबने छोड़ा।

शिव
वह चेतना है
जो कहती है
कि जब सब डर जाएँ,
तब कोई होना चाहिए
जो डर को पी जाए,
और फिर भी मुस्कुराए।

उन्होंने कहा नहीं
कि उन्होंने संसार को बचाया,
उन्होंने प्रचार नहीं किया
कि वे नायक हैं
उन्होंने बस
अपना काम किया,
और ध्यान में बैठ गए
जैसे कुछ हुआ ही न हो।

नीलकंठ शिव
वह मौन महानता है।
जो दिखती नहीं, पर धारण करती है।
जो जलती है, पर ताप नहीं देती।
जो पी जाती है,
ताकि बाकी सब जी सकें।

# बीत रही है धीरे धीरे...

– श्री. श्याम सुन्दर तिवारी,
खण्डवा, म.प्र.

बीत रही है धीरे-धीरे,
भीगी हुई सदी ।।
ढलती उम्र कैदखानों में,
बूढ़ी हुई नदी ।।
झड़े बाल पर्वत के सारे,
धूप चिलकती भाल ।
चुल्लू भर पानी को हिरनी,
ढूँढ़ रही है ताल ।
दिखती नहीं हरी झरबेरी,
फलती लदी फदी ।।
हैं उदास सूने गोठाने,
स्वप्न हुई अमराई ।
बिकता है बोतल में पानी,
कठिन हुई पहुनाई ।
हमने ही पत्थर से अपनी,
भाग्य रेख लिख दी ।।
अश्व समय का कहाँ रुका,
जीवन अनुबंधों पर ।
जो जीता वह चढ़ा हुआ था,
श्रम के कन्धों पर ।
बिना रुके गाड़ी फिर से,
यात्राओं पर चल दी ।।

# पति पत्नी

– डॉ. अनन्त कीर्ति वर्द्धन, मुजफ्फरनगर, उ.प्र.

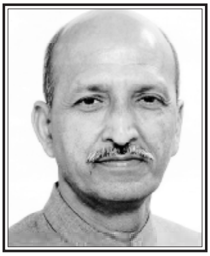

नौकरानी
केवल नौकरानी होती है
कितनी भी ख़ास हो
परिवार नहीं होती है ।
तुमने घर संवारा
और
मैंने
घर सँवारने के लिए
बाहर सँभाला ।
तुमने घर पर
छत के नीचे रह
रिश्ते जोड़े
और मैं
धूप छाँव बारिश में
घर के लिए
परिवार की ख़ुशी के लिए
स्वत्व को भुला
अर्थ कमाता रहा ।
नंगे पाँव भरी दोपहरी
बरसात मे भीगता
कभी
पानी की जगह
आँसू का आचमन
क़मीज़ का फटा कॉलर
बार–बार सिले जूते
परन्तु
परिवार के लिए
सदैव नये लाने का
प्रयास किया ।
अपने श्रम का हिसाब
तुमने बता दिया
नौकरानी बर्तन माँजना
कपड़े धोना डस्टिंग
सब गिना दिया ।
क्या
मेरा श्रम
कोई क़ीमत नहीं रखता
मेरा धूप में चलना
तुम्हें नहीं खलता ?
तुमने मकान को
घर बनाने का क़िस्सा
बता डाला
अपने योगदान को
हिसाब लगा भुना डाला
किसी परेशानी
या शिकायत को
अपने मैके या ससुराल
में सुनाकर
हमदर्दी बटोर ली
कभी सोचा
दर्द मुझे भी होगा
तुम सुनती नहीं
किसी और से कह नहीं
सकता
क्योंकि
मैं पुरूष हूँ ।
मुझे नहीं याद
स्वयं के लिए
मैं कब जिया
जो किया
सब तुम्हारे
व परिवार के लिए किया ।
यहाँ तक कि
अगर कभी एक रोटी
कम खायी
तो तुमने
परिवार को सँभालने की
दुहाई दे
जबरन
एक रोटी और खिलायी ।
यह सच है कि
तुमने
मकान को घर बनाया
परन्तु
नहीं जानती
मकान में
नींव बनकर
कौन समाया ?
दीवारों में
सिमेन्ट की जगह
रक्त मांस मज्जा
किसने लगाया ?

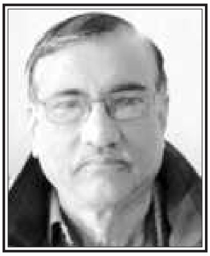

## स्वर्णिम प्रकृति

– डॉ. अखिलेश शर्मा,
इन्दौर, म.प्र.

स्वर्ण आभा बिखेरती धूप वाह भाई वाह !
सूरज का स्वर्णिम रूप वाह भाई वाह !
खेतों में पकती आस कृषक की
मन में जगते भाव अटूट वाह भाई वाह !
भीखू की बस्ती में है छाई गजब उमंग
खप्पर से उतरी उजली धूप वाह भाई वाह !
पेड़ों के पत्ते, फूल, कली सब हर्षाए
ओस की बूंदें करती उछल-कूद वाह भाई वाह !
शोर मचाएँ पंछी सारे खुश होकर
नदिया के जल की छटा अनूप वाह भाई वाह !

---

## चलो चरित्र बदला जाये

– एडवोकेट
डी.के.कनोजिया,
दिल्ली

चलो चरित्र बदला जाये,
कुछ और रूप रचा जाये ।
अब तक जो चेहरा ओढ़ा था,
उसको दूर किया जाये ।
जो मन में पीड़ा छुपी हुई,
वो भी आज कहा जाये ।
सपनों के सौदागर बनकर,
थोड़ा-सा छल किया जाये ।
कभी विवशता, कभी विवेक से,
रिश्तों का मान रखा जाये ।
दुनिया की ये रंगीन गली,
थोड़ा ठहर लिया जाये ।
जो जख़्म छुपे हैं सीने में,
उन पर भी हँस लिया जाये ।
जीवन की हर इक साजिश को,
बिना भय सहे लिया जाये ।
चलो किरदार बदल कर हम,
खुद को ही जीत लिया जाये ।

## स्याही की उड़ान

– श्री. अवनीश कुमार गुप्ता
'निर्द्वंद', प्रयागराज, उ.प्र.

फिर से उठाई वो कलम मैंने,
जो थककर गिरी थी कभी,
स्याही में मिला दर्द का दरिया,
अश्कों से भीगी हर एक सदी थी ।

कितनी रातें रोई वो कलम,
सपने बिखरे हुए पन्नों पर,
हर लफ़्ज़ में थी बस मायूसी,
हर कहानी थी अधूरी ।

तन्हाई में खोई हुई,
वो कलम अब फिर जिन्दा है,
जैसे हर जख्म अब भरता हो,
शब्दों में उसकी उम्मीद जिंदा है ।

अब लिखूँगा मैं नंये फसाने,
आवाज़ दूँगा उन खामोशियों को,
जिनके लब कभी बोले नहीं,
उन दर्द भरी बंद गुफ्तगू को ।

हर बूंद स्याही की अब,
सिर्फ लफ्ज़ नहीं, चीखें होंगी,
आवाज़ें उठेंगी हर कोने से,
अब ख़ामोशियाँ नहीं झुकेंगी ।

आओ मिलकर हम सब चलें,
नयी सुबह का चिराग़ जलाएँ,
जहाँ हर दिल बोल सके,
और हर हाथ कलम बन जाए ।

अब हर लफ्ज़ बोलता है,
सिर्फ ख़ामोश नहीं रहता,
दर्द को बदलता है अमन में,
नफरत को बदलता है मोहब्बत में ।

हर बूँद से बहेगी वो बातें,
जो दिलों को जोड़ देंगी,
रंग लाएगी हर स्याही,
जिनसे इन्सानियत खिल उठेगी ।

न रहे कोई पर्दा, न हो कोई डर,
सबकी आवाज़ एक रंग बन जाए,
किसी की नज़र न फिर फिसले,
ये कलम अब तहरीर–ए–इंसाफ़ कहलाए ।

## दोस्त

– डॉ. अनन्त कीर्ति वर्द्धन, मुजफ्फरनगर, उ.प्र.

ढूँढते हो दोस्त तुम तो, दोस्त बनना सीखिये,
कर्ण सा साथी मिले, दुर्योधन बनना सीखिये ।
कर रहे उम्मीद सबसे, तुम वफा की दोस्तों,
खुद भी तो निज जीवन में, वफा करना सीखिये ।

## सुरुचि और सेहत

– डॉ. रामानुज पाठक, सतना, म.प्र.

कलाओं में बसी है मधुरता की बात,
मन को करें ये निर्मल करें, यह सौगात ।
संगीत हो, चित्र हो या कोई रचना,
हर कला में छुपी है जीवन की भावना ।

तनाव से लड़ने की देती है राह,
कला से जुड़ो, तो मिटे हर आह ।
चिंता, अवसाद सब दूर हो जाए,
मन में सुकून की बयार बह जाए ।

रंगों में रंग जाए जीवन का क्षण,
नृत्य की लय से मिल जाए अपनापन ।
मनोरंजन ही नहीं, यह उपचार भी है,
कला से जुड़ना स्वास्थ्य की राह भी है ।

भावनाओं को देती है उड़ान,
मन की गहराई से बने नई पहचान ।
थिएटर, पेंटिंग, कविता या गीत,
हर विधा में छिपा कोई अमूल्य मीत ।

तो चलो ! कलाओं को अपनाएँ,
सुरुचि के संग जीवन सजाएँ ।
स्वास्थ्य, सुख और संतुलन की बात,
कला है जीवन की अनुपम सौगात ।

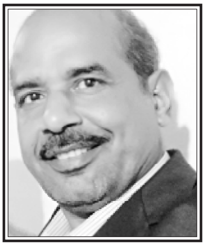

## भोले का संदेशा

– श्री. कार्तिकेय कुमार त्रिपाठी 'राम', इन्दौर, म.प्र.

जब–जब गाता मन भोले को,
तन में रंग उतर जाता,
जीवन का हर सपना मेरा,
पल में पूरा हो जाता ।
जब–जब गाता...
छुपा हुआ हर शब्द में भोले,
सृष्टि का श्रृंगार यहाँ,
तन–मन जब–जब करवट लेता,
बस जाता संसार वहाँ ।
जब–जब गाता...
बसी हुई दुनिया भोले की,
सबमें प्रीत बढ़ाती हैं,
भक्ति के बस में होकर ये,
सबमें आस जगाती हैं ।
जब–जब गाता...
मन का दर्पण उजला होता,
द्वेष–भाव सब धुंधला होता,
भोले का संग मिल जाने से,
प्रेम भाव फिर गहरा होता ।
जब–जब गाता...
सावन की रुत अब आई,
भोले का संदेशा लाई,
इस जन–जीवन संग धरा भी,
मंद–मंद खुद–भी मुस्काई ।
जब–जब गाता...

# मरने से पहले मरता क्यों है ।

– श्री. सुनील प्रकाश भारद्वाज,
लखनऊ, उ.प्र.

मौत से भाई डरता क्यों है ।
मरने से पहले मरता क्यों है ।
फूल को रहना होता दो पल ।
हँसता रहता लेकिन हरपल ।
मिटने का उसे शोक न होता ।
खिलता रहता कभी न रोता ।
रो रो कर घर भरता क्यों है ।
मरने से पहले मरता क्यों है ।
जिंदा दिली से जीना सीखो ।
प्यार का अमृत पीना सीखो ।
वर्तमान को अपना समझो ।
बीते को तुम सपना समझो ।
अपनों से तू लड़ता क्यों है ।
मरने से पहले मरता क्यों है ।
स्वर्ग यही और नर्क यही ।
सोच-सोच का फर्क यही ।
घर खुशियों से भर जाता ।
मन से मन जो मिल जाता ।
दुख के पीछे पड़ता क्यों है ।
मरने से पहले मरता क्यों है ।
कर्म ही तेरे जीवित रहेंगे ।
हवा में उड़ उड़ कर बहेंगे ।
प्रेम की गलियों का तू राही ।
कितनी सुंदर दुनियाँ पाई ।
स्वर्ग सी धरा पर सड़ता क्यों है ।
मरने से पहले मरता क्यों है ।

# पावस

– डॉ. अवधेश कुमार चंसौलिया,
ग्वालियर, म.प्र.

गर्मी से राहत देकर के
मन को हर्षित करती पावस ।
मुरझाते पादव खिल उठते
जीवन उनको देती पावस ।
पशु-पक्षी भी खुश हो जाते
मस्ती उनको देती पावस ।
भूधर जब कुरूप हो जाते
उनका मेकअप करती पावस ।
नदियाँ इठलातीं बलखातीं
उन्हें स्वतंत्र करती है पावस ।
ताल तलइयाँ उफन रहे हैं
झोली उनकी भरती पावस ।
मोर नाचते वेसुध होकर
खुशियाँ इतनी देती पावस ।
कृषक हमारा आल्हा गाये
उत्सव जैसा करती पावस ।
कण-कण झूम रहे मस्ती में
जीवन उनको देती पावस ।
बादल खेल रहे हैं खो-खो
मन प्रसन्न कर देती पावस ।
धरती ने स्नान किया है
रूप संवारे उसका पावस ।
दसों दिशायें डंका पीटें
मनमोहक आयी है पावस ।
तीन लोक में जय जय होवे
स्वागत-स्वागत तेरा पावस ।
कहीं-कहीं बाढ़ें भी आतीं
क्रोध भयंकर करती पावस ।

# कविताएँ

- श्री. केशव शरण, वाराणसी, उ.प्र.

## बच्चा और घर

बालू दे दो
मिट्टी दे दो
रंग दे दो
और देखो
बच्चा क्या बनाता है ?
सबसे पहले वह घर बनाता है
घर के बाद ही कुछ और
जैसे रास्ता, पेड़, आदमी, फूल, चिड़िया, बंदर
या मोर
बड़ा होने पर
वह कला या शिल्प न भी बनाए
मगर घर तो
बनाएगा ही
परिवार चलाने के एतबार से
घर बच्चे की कला का
पहला सोपान है
और सपना भी
भविष्य का सुनहरा
उसके सपने को
बालू, मिट्टी और रंग दे दिया
अब प्यार से
उसकी कला देखो !

## बारात

धीमे-धीमे
सरकती बारात में
तेज़-तेज़ थिरक रहे हैं लोग
डीजे से दूर,
डीजे के क़रीब
झोपड़-पट्टी के बच्चे
नाच रहे हैं
जो किसी भी बारात में
बाजे के पीछे हो लेते हैं
स्वांत:सुखाय कि अर्थ:लाभाय
लेकिन आनंद लेते और देते हैं नाचने का
अपना फ़न दिखाते हैं
ईनाम पाते हैं
बारात शादी घर में जाती है
और वे लौट जाते हैं

बाद रात की नहीं है चाँदनी की है
रात तो हर दिन के बाद आती है
चाँदनी हर रोज नहीं हर रात नहीं
कुछ दिनों की होती है दिल को हाँ वह भाती है ।

# मेरे घर का आंगन

– श्री. तेज नारायण राय, दुमका, झारखंड

मेरे घर का आंगन
भले ही कच्ची मिट्टी का है
पर पता नहीं ऐसा क्या है
मेरे घर के आंगन में
कि गाँव की औरतें
यहीं आकर बैठी रहती हैं अक्सर
और बतियाती हैं अपना सुख दुख

बच्चे भी यहीं इसी आंगन में
मचाते हैं उछल कूद

फेरीवाला हो या चूड़ीहारिन
यहीं इसी आंगन में आकर बैठती हैं

कथावाचक भी यहीं इसी आंगन में
तुलसी चोरा के पास बैठ सुनते हैं
सत्यनारायण की कथा
और बबूल व तुलसी पर
चर्चा के बहाने बताते हैं
जीवन में अच्छे बूरे कर्मों का भेद

कथावाचक जब बांचते हैं कथा
घर के आंगन में
तब गाँव की औरतें ही नहीं
बड़े बूढ़े बुजुर्ग भी
आकर बैठते हैं इस आंगन में
और धर्म कर्म पर चर्चा करते
जीवन का मर्म समझते हैं

ऐसे में जब मेरा पड़ोसी
अपने पक्के मकान की छत से
अहम और घमंड में चूर होकर
देखता है मेरे हँसते खेलते आंगन को
तब मेरी माँ के चेहरे की झुर्रियों से
झांकता है मेरे घर का संस्कार

तब मुझे कच्ची मिट्टी से बने
अपने घर के आंगन पर होता है नाज
और मैं गौरवान्वित होता हूँ
अपने घर के आंगन में खड़े होकर

आज जब गाँव में बढ़ते जा रहे हैं पक्के मकान
और घरों सबसे घरों से
गुम होता जा रहा है आंगन

तब ऐसे में मुझे
मेरे घर का आंगन देता है संदेश
कि आंगन है तो बची है
घर की आत्मा
बचा है गाँव घर में
एक दूसरे के घर
आने जाने का रिवाज

इसलिए घर की आत्मा को बचाना है
तो घरों से गुम होते जा रहे
आंगन को बचाओ
क्योंकि आंगन है तो घर ‘घर’ है
बिन आंगन के घर सूना–सूना है ।

## पावन मन अनुरागी

(सार छंद आधारित गीत)

– डॉ. अर्जुन गुप्ता 'गुंजन',
प्रयागराज, उ.प्र.

जन्मों के शुचि पुण्य फलें जब,
प्रीति हृदय में जागी ।
प्रेम पंथ का पथिक पुरंजय,
पावन मन अनुरागी ।।

मीरा की मन्नत मनमोहन,
शबरी के रघुराई ।
घोर तपस्या किया उमा ने,
महादेव को पाई ।।

कृष्ण प्रेम में घायल राधा,
प्रेम रसों में पागी ।
प्रेम पंथ का पथिक पुरंजय,
पावन मन अनुरागी ।।

प्रेमसिक्त है कण-कण जग में,
मधुरिम हो हर वाणी ।
प्रेम-बंध से बँधा हुआ है,
सकल जगत का प्राणी ।।

प्रेम प्रसारण हो जब जग में,
उभय-पक्ष बड़भागी ।
प्रेम पंथ का पथिक पुरंजय,
पावन मन अनुरागी ।।

चाहत के बंधन में मोहन,
बँधे ग्वालबालों से ।
मथुरा से जब गए द्वारिका,
उबरे कब ख्यालों से ।।

भक्तों को भगवान मिले जब,
लगन भक्ति की लागी ।
प्रेम पंथ का पथिक पुरंजय,
पावन मन अनुरागी ।।

## हे घृणा !

– श्री. भाऊराव महंत,
बालाघाट, म.प्र.

हे घृणा ! आओ न मेरे द्वार पर-
इस सदन में प्रेम का वर्चस्व है ।
पूर्ण होगा ही नहीं उद्देश्य वह,
आप आए हो यहाँ जिस ध्येय से ।
लौट जाओगे स्वयं आहत हुए,
देख घर में आपसी के प्रेय से ।
क्योंकि मेरे तुच्छतम आवास में-
प्रेम ही बस प्रेम ही सर्वस्व है ।।
बाल-बच्चों के सहित माता-पिता,
बोल मीठे सब यहाँ पर बोलते ।
वृद्धजन को नित यहाँ सम्मान दे,
कर्ण में जैसे कि मिश्री घोलते ।
सुन मधुर वाणी सभी से इस तरह-
दीर्घ लगता घर भले ही ह्रस्व है ।।
हे घृणा ! जो आपको आने न दे,
प्रेम ही रक्षा-कवच परिवार का ।
दूर ही रहती विकृतियाँ द्वार से,
आचरण करते सभी जब प्यार का ।
आजमाओ हार निश्चित आपकी,
इसलिए परिवार पर गर्वस्व है ।।

## मनचले सावन ने...

– श्री. व्यग्र पाण्डे, गंगापुर, राजस्थान

मनचले सावन ने
बूंदों की कंकरी से
अनमनी अलसाई नदी में
भर दी थिरकन
उछलने लगी वो
अल्हड़ जवान लड़की सी
मनचले सावन ने
अपने कैमरे का फ्लैश क्या मारा
जड़वत पहाड़ भी
मुस्कराने लगा
फोटो खिंचवाते
लड़के की तरह

मनचले सावन ने
ठहाका जब लगाया
दाना चुगना छोड़ मोर
पंख फड़फड़ाकर
करने लगा नृत्य
जैसे डीजे की आवाज सुन
नाचने लगते हैं
आजकल के बच्चे
मनचले सावन ने
बरसकर
भर दिये पोखर
बिछा दी जाजम पानी की
ये देखकर
आ धमके मेंढ़क
पंच-पटेलों की भांति
पंचायत करने
मनचले सावन ने
अपने दामन से
पुरुरवा के स्वरों में
भर दी सरगम
ये देख झिंगुर भी
गाने लगे हैं
अपनी मस्ती में
राग मल्हार

## उजास एक आस

– श्री. सतीश 'बब्बा', चित्रकूट, उ.प्र.

तिमिर अंधकार,
नहीं तनिक उजास,
मन रहे उदास,
पानी केर पियास !
दूर दूर तक,
पानी की नहीं आस,
यह जीवन है आस,
मन क्यों रहे उदास !
फिर ऐसे आए पास,
जब प्राण पखेरू जास,
किसी को खुदा की आस,
नहीं गाड करे निरास !
वाहे गुरु पूरण करते आस,
कोई शंकर की राखे आस,
कोई कृष्ण के अति पास,
अपने कर्म का नहीं आभास !
पूरी जिंदगी है आस,
खुद करते अंधेरा पास,
बस आस ही, आस ही, आस,
उजास एक आस !!

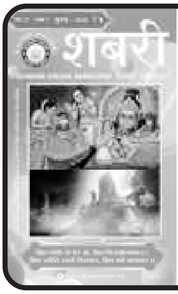

# पाठकों के पत्र ...

अपनी प्रतिष्ठित पत्रिका में श्रेष्ठ रचनाकारों के बीच में मेरे छन्दों को स्थान देने के लिए आपका हृदय से आभार आदरणीय ।

– श्री. ऋतुराज पाण्डेय 'ऋषि',
लखनऊ, उ.प्र.

---

बहुत समय बाद ऐसी ज्ञानवर्धक पत्रिका मिली है । दक्षिण भारत में छपी इस पत्रिका का आलेख, कविताएँ एवं अन्य विधाएँ सभी सारगर्भित और उच्च कोटि की हैं। सम्पादकीय का तो कहना ही क्या, एक सेवानिवृत्त पिता की वेदना भावविभोर कर देती है ।

– श्री. प्रदीप कुमार अग्रवाल प्रदीप्त, दिल्ली

---

आदरणीय संपादक महोदय,

सभी राज्यों में भाषा विवादों के बीच आप तमिलनाडु से हिन्दी में शबरी शिक्षा समाचार पत्रिका निकाल कर सराहनीय काम कर रहे है । सभी राज्यों के लोग अगर इसी तरह इक दूसरे की स्थानीय भाषाएँ अपनाना सीख लें तो सारे भाषा विवाद समाप्त हो जायें। आपके इस पुनीत प्रयास को साधुवाद ।

– श्री. सुनील प्रकाश भारद्वाज,
लखनऊ, उ.प्र.

---

बहुत ही सुंदर और अप्रतिम । शबरी वेबसाइट का प्रारंभ दिल को सुकून देनेवाला है । इससे यह पत्रिका प्रगति के नवसोपन तो अर्जित करेंगी ही तथा पाठकगण भी अपनी पसंद और सुविधानुसार किसी भी अंक का पठन-पाठन किसी भी समय कर सकेंगे । यह काम लाजवाब ही नहीं काबिले-तारीफ है जनाब । संपादकीय टीम का बहुत-बहुत आभार और हार्दिक-हार्दिक बधाइयाँ ।

– श्री. नलिन खोईवाल, इंदौर,म.प्र.

---

सुंदर, पठनीय और समसामयिक अंक । हिन्दी की प्रगति में शबरी का अमूल्य योगदान अविस्मरणीय है । साधुवाद और शबरी का हृदय से अभिनंदन, खूब-खूब आभार ।

– श्री. नलिन खोईवाल, इंदौर, म.प्र.

---

बधाई, हिन्दी के लिए आपका समर्पण केवल सराहनीय ही नहीं अनुकरणीय भी है ।

– श्री. राजेन्द्र परदेसी, लखनऊ, उ.प्र.

---

बहुत समय बाद ऐसी ज्ञानवर्धक पत्रिका मिली है । दक्षिण भारत में छपी इस पत्रिका का आलेख, कविताएँ एवं अन्य विधाएँ सभी सारगर्भित और उच्च कोटि की हैं। सम्पादकीय का तो कहना ही क्या, एक सेवानिवृत्त पिता की वेदना भावविभोर कर देती है ।

– श्री. प्रदीप कुमार अग्रवाल प्रदीप्त, दिल्ली

---

आर.जे. संतोष कुमार जी की कहानी अनकही पढ़ी, बहुत अच्छी लगी, कृपया उन्हें मेरी बधाई प्रेषित करें ।

– डॉ. जमुना कृष्णराज,
चेन्नै, तमिलनाडु

---

बहुत-बहुत धन्यवाद, सर। यह पत्रिका बहुत गुणवत्तापूर्ण है और इसका सारा श्रेय आपके निस्वार्थ प्रयासों को जाता है ।

– श्री. धीरेंद्र कुमार,
मुंबई, महाराष्ट्र

बहुत बहुत धन्यवाद एवं हार्दिक आभार प्रिय एम श्रीधर सेलम जी ।

शबरी शिक्षा समाचार पत्रिका का जुलाई 2025 का अंक देखकर बहुत प्रसन्नता हुई । प्रसन्नता इस तथ्य की है दक्षिण भारत से हिन्दी भाषा का प्रचार प्रसार आपके द्वारा इस पत्रिका के माध्यम से निरंतर किया जा रहा है । जो बहुत ही सराहनीय और प्रेरणादायक कार्य है ।

–श्री. कर्नल आदि शंकर मिश्र 'आदित्य', लखनऊ, उ.प्र.

---

व्यस्ततम अर्थयुग में भी परिवार, सगे – संबंधियों, दोस्तों को कुछ समय देना, प्यार देना यही जीवन का असली आनंद है ।

प्रेरणास्पद संपादकीय के साथ एक से बढ़कर एक सुंदर कहानी, कविता के अनमोल वचनों से भरपूर जुलाई माह की पत्रिका अत्यंत प्रशंसनीय एवं पठनीय है ।

दिनानुदिन पत्रिका की बढ़ती लोकप्रियता के लिए हार्दिक बधाई शुभकामनाएँ आदरणीय ।

– श्री. विमल कुमार, पूर्णियाँ, बिहार


## வாணி விகாஸ் தேர்வு

### புத்தக விபரம்

| புத்தகத்தின் பெயர் | |
|---|---|
| வாணி விகாஸ் நிலை-1 | ₹ 250.00 |
| வாணி விகாஸ் நிலை-2 | ₹ 260.00 |
| வாணி விகாஸ் நிலை-3 | ₹ 270.00 |
| வாணி விகாஸ் நிலை-4 | ₹ 280.00 |
| வாணி விகாஸ் நிலை-5 | ₹ 290.00 |
| வாணி விகாஸ் நிலை-6 | ₹ 300.00 |
| வாணி விகாஸ் நிலை-7 | ₹ 310.00 |
| வாணி விகாஸ் நிலை-8 | ₹ 320.00 |


# नवांकुर

## सपना


– लक्षिता श्रीधर,
ग्यारहवीं कक्षा, एमराल्ड वैली पब्लिक स्कूल, सेलम, तमिलनाडु


हरेक का अपने जीवन में अपना सपना होता है । उसे पूरा करने के लिए वह कुछ भी कर सकता है । हर एक का सपना अलग होता है । कोई भी सपना हो उसमें अटल रहना बहुत जरूरी होती है । एक को डॉक्टर बनना है और एक को इंजीनियर । सपना कोई भी हो किन्तु उसे पाने के लिए किया हुआ कोशिश बहुत जरूरी होती है । कोई भी स्थिति हो, कभी अपने सपने से दूर नहीं भागना चाहिए । उसे पाने की कोशिश करना चाहिए । अपना सपना सच होने पर, जीवन पूरा लगता है । इसीलिए हर व्यक्ति को अपने जीवन में सपना देखना जरूरी होती है ।

---

### नवांकुर – रचनाएँ आमंत्रित

रचयिता की आयु 21 वर्ष से अधिक नहीं होनी चाहिए । रचना मौलिक व अप्रकाशित होनी चाहिए । खड़ीबोली हिन्दी का प्रयोग करें । रचना 50 से 150 शब्दों में होनी चाहिए हैं ।

**कृपया आयु प्रमाण-पत्र की प्रति साथ भेजें ।**

# छाँव में आशा

– प्रजित. जे. संतोष,
सी.ऐ.टी. कॉलेज, कोवै, तमिलनाडु

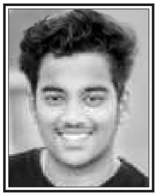

संदेह और पीडा की छाया में
सहता रहा फिर भी कम नहीं हुआ
दिन अंधेरे ठहरे थे रातें ठहरीं लंबी
फिर भी दिल में एक शांत भाव ठहरा ।

आशा की एक चिंगारी टिमटिमाती रोशनी
अंधकार को चीरते हुए वह प्रज्वलित हुई
हर गिरावट के साथ फिर खडा हो जाना
आत्मा को बनाता है दृढ, साहस बढ जाता ।

घावों और आँसुओं के बीच खोज लो रास्ता
उषा का एक सवेरा लाता है एक उज्जवल दिन
आशा जब खिलती है खिल जाता है तब जीवन

# बहरा

– शंकर वेंकटेश्वरन,
श्री कृष्णा आर्ट्स एंड साइंस
कॉलेज़, कोवै, तमिलनाडु

500 फुट पहाड़ के नीचे, बहुत सारे मेंढक थे । तीन मेंढक ऊपर चढ़ने और शीर्ष तक पहुँचने के लिए तैयार थे । पहला मेंढक 100 फुट तक जाकर नीचे गिर गया । फिर, दूसरे मेंढक 300 फुट तक जाकर नीचे गिर गया । तीसरा मेंढक जाकर ऊपर पहुँच गए । सारे मेंढक नीचे एक दूसरे को देकर पूछते थे कि यह मेंढक कैसे पहुँचा ? एक ने कहा कि वह मेंढक सुन नहीं सकता । इससे हम यह एक बात को समझ सकते हैं कि जिंदगी में जब हम जो भी काम कर रहे हैं, कई लोग कई चीज बताते रहते हैं, बोलते रहते हैं कि, ''यह मत करना, वह यह मत करना, यह मत सोचना, हार जाओगे'' कुछ भी ! लेकिन इस तरह की परिस्थितियों में हम खुद बहरा बनना चाहिए, था कि हम कुछ भी ना सुन सके जो हमारे काम और लक्ष्य के खिलाफ है और उन्हें प्राप्त करने पर ध्यान केन्द्रित करना तथा कदम उठाना चाहिए ।

– श्रीमती. अलमेलु कृष्णन, चेन्नै, तमिलनाडु

# पठितम्, अभिरुचितम्, अनूदितम्

## प्रजानां समस्यां निर्मूलिता या नाच्चियार्

शत्रूणां सिंह; इति प्रसिद्धः नन्दीवर्मन तृतीयः पल्लववंशस्य शासकः आसीत् । स;पराक्रमी सुशासक: प्रजावत्सल; आसीत् । अपि च सः कलासाहित्ययोः महान् संरक्षकः आसीत् । नन्दिवर्मनतृतीयस्य प्रशंसया कोऽपि कविना नन्दिक्कलम्बकं नाम काव्य ग्रन्थं रचितम् ।

तमिलनाडुदेशे तेळ्ळार नगरे पाण्ड्यसेना नन्दीवर्मस्य शासन काले पल्लवसेनया सह युद्धं कृतवती । अस्मिन् युद्धे नन्दीवर्मनः महान् विजयश्रीलालित: अभवत् । अस्य विजयस्य कारणात् पल्लवराजः ''तेळ्ळार लङ्घित नन्दिवर्मन्'' इति विशेषं नामश्च अर्जितवान् ।

एकदा अस्मिन् तेळ्ळार ग्रामे आयोजिते पंचायतनिर्वाचने पेरुं करुणै नामिका महिला सर्वसम्मत्या पंचायतपरिषदः प्रमुखत्वेन निर्वाचिता । सा न्यायप्रिया निष्पक्षवादी कर्तव्यपरायणा च आसीत् ।

एकस्मिन् दिने सायंकाले काश्चन महिलाः कुण्डं प्रति गत्वा जलं आकर्षयित्वा गृहं प्रत्यागच्छन्ति स्म । यदा पंचायताध्यक्षाया: पेरुणकरुणै महाभागाया; पतिः मत्तः भूत्वा महिलानां विषये अपशब्दं वक्तुं आरब्धवान् । तदा एतेन व्यथिताः महिलाः पंचायताध्यक्षाया: समीपं गत्वा शिकायतुं प्रवृत्ताः। परदिने ग्रामपरिषदे प्रकरणस्य श्रवणं कृत्वा अध्यक्षा निर्णयं दत्तवती । अभियुक्तेन तस्मिन् ग्रामे तिरुमूलट्टानेश्व रमन्दिराय काश्चन गावःअन्य वस्तूनि च दानं कृत्वा प्रतिदिनं प्रातः 48 दिवसान् यावत् सूर्योदयात् पूर्वं मन्दिरं गत्वा अग्रभागं मार्जन परिमार्जनेन च स्वच्छं कृत्वा पुष्पमाला बद्ध्वा दीपं प्रज्वालयितुं आदेशः दत्तः ।

परदिनात् पेरुं करुणै महाभागा एव मन्दिरम् आगत्य मार्जनेन परिमार्जनेन च् मन्दिर्द्वारं स्वच्छं कृत्वा, पुष्पमालां बद्ध्वा दीपप्रज्वलनं च करोति स्म । एतत् दृष्ट्वा केचन जनाः पृष्टवन्तः, ''भवतः दण्डितः भर्तुः यत् कार्यं कर्तव्यं तत् किमर्थं करोषि ? त्वया एव दण्डः दत्तः, किमर्थं स्वयं कर्तव्यः ?''

पंचायताध्यक्षा अवदत्, ''अपराधस्य दण्डः मया दत्तः, न्यायाधीशत्वेन । तस्य दुःखेषु भागं ग्रहीतुं पत्नीरूपेण स्वकर्तव्यं निर्वहामि ।''

मत्तः पतिः ग्रामस्त्रीणां उपद्रवं कुर्वन् आसीत् । यद्यपि अपराधी तस्याः पतिः आसीत् तथापि तस्मै यथायोग्यं दण्डं दत्तवान् इति प्रसन्नाः भूत्वा ग्रामजनाः प्रजानां समस्यां निर्मूलिता या नाच्चियार् इति शिलायां उत्कीर्णं कृत्वा तां प्रशंसितवन्त ।

# தமிழமுது – நன்மை கடைப்பிடி

– **எம். ஸ்ரீதர்,** நிறுவனர் : சபரி சிக்ஷா சன்ஸ்தான், சேலம், தமிழ்நாடு

எண்ணமும் செயலும் தூய்மையானதானால் எல்லாமே நன்மை பயப்பதாகும். வாழ்வில் நன்மைகள் மலர வேண்டும் என்றால் நாம் நமது சொல், செயல், சிந்தனை ஆகியவற்றை வளமானதாக, நலமானதாக மாற்றிக்கொள்ள வேண்டும்.

நமது வாழ்வு என்பது நம்மைப் பற்றிய சிந்தனைகளை மட்டுமே கொண்டிருக்காமல், நம்முடன் சேர்ந்து வாழும் பிறர் நலனையும் பேணுவதாக அமைந்தால் அதுவே பாராட்டக்கூடிய ஒரு வாழ்க்கையாக கருதப்படும்.

தமிழர் நலனுக்காக மட்டுமல்லாமல் உலகில் வாழும் ஒவ்வொரு மனிதனின் நலனுக்காக தம்முடைய கருத்துக்களை மிக எளிமையாகவும் வலிமையாகவும் கூறிச் சென்றவர்கள் திருவள்ளுவரும் ஔவையாரும், இரண்டே சொற்களில் மிக எளிமையாக **நன்மை கடைப்பிடி** என்று நம் ஔவை சொல்லி இருக்கிறார். எந்த செயல் செய்தாலும் அதில் நமக்கும் பிறர்க்கும் அனைவருக்கும் நன்மை நடைபெற வேண்டும் என்பதே அவருடைய சீரிய எண்ணம். நாளும் நன்மை தரக்கூடிய செயல்களை செய்யும் போது அவற்றை தொடர்ந்து செய்யும்போது அனைவருக்கும் அது இன்பத்தை தரக்கூடிய ஒரு செயலாக இருக்கும். எனவே நாம் **நன்மை கடைபிடிப்போம்** நலமுடன் வாழ்வோம்.

தொடரும்...

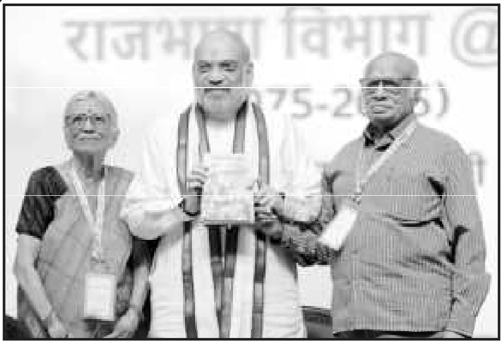


26 जून 2025 को राजभाषा विभाग के स्वर्ण जयंती समारोह में गृह मंत्री श्री. अमित शाह ने चेन्नै की डॉ. राजलक्ष्मी कृष्णन को सम्मानित किया । भारत मंडपम में आयोजित इस कार्यक्रम में श्री शाह ने 81 वर्षीय डॉ. कृष्णन को युवा महिला कहकर तमिलनाडु में 58 वर्षों से उनके द्वारा किए जा रहे हिन्दी प्रचार-प्रसार की सराहना की । इस अवसर पर एक स्मारक सिक्का भी जारी हुआ । डॉ. कृष्णन ने अपनी पुस्तक 'महाभारत' और उसके तमिल अनुवाद की प्रति भेंट की ।

# அருள் உலா
# திருமுறைத் திருத்தல யாத்திரை
# திருநள்ளாறு


- கயிலைத்திருவடி 'யுவதூத்'

Dr. **என். சந்திரசேகர்,** M.A., B.Ed., Ph.D., சேலம், தமிழ்நாடு

செம்பொன் மேனிபெண் ணீறணி வானைக்
கரிய கண்டனை மால்அயன் காணாச்
சம்பு வைத்தழல் அங்கையினானைச்
சாம வேதனைத் தன்னொப்பி லானைக்
கும்ப மாகரி யின்னுரீ யானைக்
கோவின் மேல்வருங் கோவினை எங்கள்
நம்பனை நள்ளாறனை அமுதை
நாயி னேன்மறந் தென்நினைக் கேனே.

- ஸ்ரீ சுந்தரர் அருளிய
7-ஆம் திருமுறைப் பாடல்

தர்ப்பாரண்யம், நகவிடங்கபுரம், நளேஷ்வரம் என்றெல்லாம் பற்பல திருநாமங்களால் சிறப்பிக்கப்படும் பெருமைக்கு உரியது திருநள்ளாறு திருமுறை திருத்தலம் ஆகும். காவிரி தென்கரையில் அமைந்துள்ள தேவாரப் பாடல் பெற்றத் தலங்களுள் இந்தத்தலம் 52ஆவது அருட்தலம் ஆகும். அரசிலாற்றிற்கும் வாஞ்சநதிக்கும் இடையே அமைந்துள்ள காரணத்தால் இந்த திவ்ய திருத்தலம் நள்ளாறு என்று அழைக்கப்பட்டது.

**அருள் வரலாறு :**

நிடதநாட்டு மன்னன் நளன், சேதிநாட்டு இளவரசி தமயந்தியை ஸ்வயம்வர மண்டபத்துள் மணந்தான். இதனால் தமயந்தியை மணம் செய்ய விரும்பி வந்த தேவர்கள் ஏமாந்தனர். தேவர்களின் ஏமாற்றத்தின் வெளிப்பாடாக நளனுக்குப் பல இன்னல்கள் வந்தன. சனியும் அவனைப் பிடித்தார். நாடு, நகரம், செல்வாக்கு என எல்லாம் இழந்த நளன் இத்தலத்து ஈசனை வணங்கி சனியின் தொல்லையில் இருந்து விடுபட்டதோடு, இத்தலத்து ஈசனாகிய தர்ப்பாரண்யேஷ்வரரை வணங்குபவரை சனிகிரஹ பாதிப்பினால் வரும் தொல்லைகள் தாக்காது இருக்கும் வரமும் பெற்றான்.

**சோமஸ்கந்த மூர்த்தி :**

ஸ்வாமி அம்பாள் இடையே ஸ்ரீ முருகர் பாலரூபியாக திருக்காட்சி தரும் வடிவமே சோமஸ் மூர்த்தி எனப்படும் சோமஸ்கந்த திருவடிவம் ஆகும்.

பிள்ளைப்பேறு இல்லாத திருமால் தர்ப்பாரண்யம் வந்து ஸ்ரீ ப்ராணேஷ்வரி ஸமேத ஸ்ரீ தர்ப்பாரண்யேஷ்வரரை வணங்கி மன்மதனைப் பெற்றார். இதற்கு நன்றி செலுத்து முகத்தான் சோமஸ்கந்த மூர்த்தி திருவடிவத்தைப் படைத்தார்.

திருமாலிடமிருந்து தேவேந்திரன் அந்த மூர்த்தியைப் பெற்றுச் சென்று அனுதினமும் வழிபாடு நடத்தி வந்தான்.

**சப்த விடங்கர் :**

ஒருசமயம் தேவாசுர யுத்தத்தில் திருவாரூரைத் தலைநகராகக் கொண்டு ஆட்சி செய்த முசுகுந்த சக்ரவர்த்தி என்ற சோழமன்னன் தேவேந்திரனுக்கு உதவி அசுரரை தோற்கடித்தான்.

ஆகையால் தேவேந்திரன் தமக்கு உதவிய முசுகுந்த சக்ரவர்த்தியைப் பார்த்து ''என்ன வேண்டுமோ கேளுங்கள்'' என்றான்.

அவரும் அனுதினமும் தாங்கள் பூஜித்துவரும் சோமஸ்கந்த மூர்த்தியைக் கொடுங்கள் என்றார்.

தமது வழிபாடு தெய்வத்தைத் தர மனமில்லாத தேவேந்திரன் அதே போல இன்னும் ஆறு சோமஸ்கந்த மூர்த்தங்களை உருவாக்கி ஒரே மாதிரி உள்ள ஏழு மூர்த்தங்களையும் வைத்து நீங்களே உண்மையான சோமஸ்கந்த மூர்த்தயே எடுத்துக் கொள்ளுங்கள் என்றான்.

முசுகுந்த சக்ரவர்த்தியும் ஈசன் அருளால் உண்மையான மூர்த்தியை எடுத்தார். இதனால் சக்ரவர்த்தியின் பக்தியின் மேன்மையால் மகிழ்ந்த தேவேந்திரன் ஏழு மூர்த்தங்களையும் முசுகுந்த சக்ரவர்த்திக்கே வழங்கி மகிழ்ந்தான். முசுகுந்த சக்ரவர்த்தியும் அந்த ஏழு சோமஸ்கந்த மூர்த்தங்களையும் திருவாரூர், திருநள்ளாறு முதலான ஏழு திருத்தலங்களில் பிரதிஷ்டை செய்து வழிபட்டார்.

உளி, கைபடாமல் செய்யப்பட்டதால் அந்த சோமஸ்கந்த மூர்த்திகள் விடங்கர் என அழைக்கப்பட்டனர். ஆக ஏழு விடங்கர்கள் ஸ்தாபிக்கப்பட்ட தலங்களே தற்போது சப்த (ஏழு) விடங்கத் தலங்கள் என்றழைக்கப்படுகின்றன.

**கொடிமரமும், நந்தியும் :**

அரசனின் ஆணைப்படி ஒரு இடையன் தினமும் தர்ப்பாரண்யேஷ்வரர் திருக்கோயிலுக்கு பால் வழங்கி வந்தான்.

ஆனால் அரண்மனை கணக்கனோ அந்தப் பாலைத் தன் வீட்டிற்கு எடுத்துச் சென்றுவிட்டு கோயில் கணக்கில் செலவு எழுதினான்.

இதனால் வெகுண்ட சிவபெருமான் தமது சூலத்தை வீச அது செல்ல உதவியாக நந்தியும், கொடிமரமும் சற்றே விலகின. சூலம் நேரே சென்று கணக்கன் தலையைக் கொய்தது.

இதன் காரணமாகவே இந்தத் திருக்கோயில் கொடிமரமும் நந்தியும் இன்றும் இறைவனுக்கு நேரே இல்லாமல் சற்றே விலகி இருப்பதைக் காணலாம்.

**சனி பகவானை எப்படி வழிபடுவது ?**

சனி தோஷ நிவர்த்தித் தலமாகிய திருநள்ளாறு ஸ்ரீ தர்ப்பாரண்யேஷ்வரர் திருத்தலத்திற்குச் சென்றவுடன் முதலில் சனிபகவானை வழிபடக்கூடாது.

முன்னதாக நள தீர்த்தத்தில் நீராடி, அக் குளக்கரையில் அருள் பாலிக்கும் ஸ்ரீ நள விநாயகரை வணங்கி, ராஜகோபுரத்தை வணங்கி, திருக்கோயில் உள்ளே நுழையும்போது முதல்படியை வணங்கி, திருக்கோயில் உள்ளே உள்ள கங்கா தீர்த்தத்தை தரிசித்து, அதன் பிறகு முதல் பிரகார சுவற்றில் வரையப்பட்டுள்ள நளனின் வரலாற்றைப் பக்தி சிரத்தையுடன் படித்துவிட்டு, ஸ்வாமி சந்நிதி சென்று அவரை வணங்கி வழிபட்டுப் பிறகு தியாக விடங்கரை வணங்கி, மரகதலிங்கத்தை தரிசித்து, அர்த்தநாரீஷ்வரர், சண்டிகேஷ்வரரை தரிசித்து கட்டை கோபுரம் வழியாகச் சென்று ஸ்ரீ அம்பாளை வணங்கி நிறைவாகவே சனி பகவானை தரிசித்து வணங்க வேண்டும்.

**சிறப்புக்கள் :**

1. இந்தத் தலத்து தலவிநாயகர் ஸ்ரீ ஸ்வர்ண விநாயகர் ஆவார்.
2. இத் திருக்கோயிலில் நவக்ரஹ சந்நிதி இல்லை.
3. முசுகுந்த சக்ரவர்த்தி ப்ரதிஷ்டை செய்த சப்த விடங்கத் தலங்களுள் இதுவும் ஒன்று.
4. இது சனிதோஷ நிவர்த்தித் தலம் ஆகும்.
5. இத்தலத்தில் அமைந்துள்ள நள தீர்த்தத்தில் நீராடினால் சனிதோஷம் அகலும், பிரம்ம தீர்த்தத்தில் ஸ்நானம் செய்ய முற்பிறவி வினைகள் தீரும், வாணி தீர்த்தத்தில் நீராட வாக்வன்மை சித்திக்கும்.
6. முற்காலத்தில் ஊரில் உள்ள மக்களுக்கு ஏதாவது ஆபத்து வருமாயின், இத்தலத்தில் உள்ள கங்கா தீர்த்தம், நள மற்றும் பிரம்ம தீர்த்தத்தில் உள்ள தண்ணீர் சிகப்பு நிறமாக மாறி எச்சரிக்கை விடுக்குமாம். இதன் மூலம் உரிய பரிகாரம் செய்து அவ்வூர் மக்கள் ஆபத்தின்றி வாழ்ந்ததாக கூறப்படுகிறது.

7. மதுரையில் கூன்பாண்டியனது வெப்பு நோயைப் போக்கி அவனை சமணத்திலிருந்து மீண்டும் சைவத்திற்கு வரச்செய்தார் ஸ்ரீ ஞானசம்பந்தர். இதனால் கோபமடைந்த சமணர்கள் ஸ்ரீ சம்பந்தரை அனல்வாதத்திற்கு அழைத்தனர். அப்போது ஸ்ரீ சம்பந்தர் இந்தத் தலத்தில் அருளிய போகமார்த்த பூண்முலையாள்... ''பதிகத்தை ஓலையில்'' எழுதிநெருப்பில் இட்டார். அது அப்படியே பசுமையாக இருந்தது. ஸ்ரீ சம்பந்தரும் வென்றார்.

**ஸ்ரீ ஸ்வாமி – ஸ்ரீ அம்பாள் :**

| | | |
|---|---|---|
| இறைவன் | : | ஸ்ரீ தர்ப்பாரண்யேஷ்வரர் (எ) திருநள்ளாற்றீசர் |
| இறைவி | : | ஸ்ரீ ப்ராணேஷ்வரி (எ) போகமார்த்த பூண்முலையாள் |
| தீர்த்தம் | : | நள தீர்த்தம், சிவகங்கை தீர்த்தம் |
| தலமரம் | : | தர்ப்பை புல், வில்வ மரம் |
| வழிபட்டு அருள் பெற்றோர் | : | திருமால், பிரம்மா, இந்திரன், அகஸ்தியர், புலஸ்தியர், அஷ்டதிக் பாலகர்கள், வசுக்கள், அர்ஜுனன், நள சக்ரவர்த்தி, முசுகுந்த சக்ரவர்த்தி முதலானோர். |

**அருட்பதிகங்கள் :**

தேவாரம் பாடிய மூவர் முதலிகள் எனப்படும் ஸ்ரீ சம்பந்தர், ஸ்ரீ அப்பர், ஸ்ரீ சுந்தரர் ஆகிய மூவராலும் பதிகங்கள் அருளப்பெற்ற பெருமைக்கு உரியது திருநள்ளாறு திவ்யதிருப்பதி.

**தரிசன காலம் :**

காலை 05.00 மணி - பகல் 12.00 மணி வரை

மாலை 04.30 மணி - இரவு 09.00 மணி வரை

**தொடர்பு முகவரி :**

ஸ்ரீ தர்ப்பாரண்யேஷ்வரர் திருக்கோயில்,
திருநள்ளாறு - 609 606.
காரைக்கால் மாவட்டம்,
புதுச்சேரி மாநிலம்.

**தொடர்புத் தொலைபேசி எண் :**

04368-236530, 236504, 9442236504

**அமைவிடம் :**

திருநள்ளாறு திருமுறை திருத்தலமானது மயிலாடுதுறையில்

இருந்து சுமார் 40 கி.மீ. தொலைவிலும், காரைக்காலில் இருந்து சுமார் 6 கி.மீ. தொலைவிலும் அமைந்துள்ளது.

திருவாரூர், நாகப்பட்டிணம், கும்பகோணம் முதலான ஊர்களில் இருந்தும் திருநள்ளாறு வர பேருந்து வசதிகள் உள்ளன.

ஸ்ரீ ப்ராணாம்பிகா ஸமேத

ஸ்ரீ தர்ப்பாரண்யேஷ்வர பரப்ரஹ்மணே நம:

... அருள் உலா தொடர்கிறது.


Scan this QR code to follow
**SHABARI BOOK SALES, SALEM**
**WHATSAPP CHANNEL**

Scan this QR code to follow
**SHABARI SIKSHA SANSTHAN, SALEM**
**WHATSAPP CHANNEL**

## இணைந்திடுங்கள்... இணைத்திடுங்கள் இதயங்களை...

அன்பார்ந்த வாசகர்களே,

உள்ளத்தையும் எண்ணத்தையும் உயர்த்தும் படைப்புகளுடன் ஹிந்தி, தமிழ், சமஸ்கிருதம் ஆகிய மும்மொழிகளில் வருகிறது சபரி சிக்ஷா சமாச்சார் பத்திரிக்கை. ஆண்டுச் சந்தா ₹100/- செலுத்தி இந்த இலக்கியப் பயணத்தில் நீங்களும் இணையலாம். நண்பர்களுக்கும், உறவினர்களுக்கும், மாணவர்களுக்கும் இந்த நல்ல பத்திரிக்கையை பரிசளியுங்கள்.

**Send MONEY ORDER or DD to**
**SHABARI SIKSHA SANSTHAN,**
**194, 2nd Agraharam, SALEM-636001. TN**
**PHONE : 9842765414**



## SHABARI SIKSHA SAMACHAR, SALEM

Form IV (See Rule 8)

Statement about ownership and other particulars about Shabari Siksha Samachar (according to Form IV. Rule 8 circulated by the Registrar of Newspaper for India).

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1. | Place of Publication | : | Salem - 636 001 |
| 2. | Periodicity of its Publication | : | Monthly |
| 3. | Printer's Name | : | D. Sivakumar |
| | Nationality | : | Indian |
| | Address | : | Sivamurthy Press, 35, A.P. Koil Street, Salem - 636 001. |
| 4. | Publisher's Name | : | M. Sridhar |
| | Nationality | : | Indian |
| | Address | : | 37, First Agraharam, Salem - 636 001. |
| 5. | Editor's Name | : | M. Venkateswaran |
| | Nationality | : | Indian |
| | Address | : | 197, Second Agraharam, Salem - 636 001. |
| 6. | Name & Address of the individuals who own the newspaper and partners or shareholders holding more than 1 % of the capital | : | M. Sridhar Owner & Publisher 37, First Agraharam, Salem - 636 001. |

I, M. Sridhar, hereby declare the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Sd.

Date : 05.08.2025. **M. Sridhar**

Signature of the Publisher

# JOIN

## Vani Vikas

*Spoken Hindi Examination*

**Learn Spoken Hindi In Simplest Way**

# வாணி விகாஸ் தேர்வுகள்

**வாய்மொழி தேர்வு**

முயன்றால் முடியாதது எதுவுமில்லை
முடங்கிக் கிடந்தால் எது முடியும் ?
எழுந்து நடந்தால் இமயமும் படியும்
மொழியொன்று கற்றால் வழியொன்று
மொழிகள் பலகற்றால் பல வழியுண்டு
வாருங்கள் சபரியுடன் வழிகாட்டுகிறோம்
வருங்காலம் வளமாகிட வழிகாட்டுகிறோம்
வாருங்கள் வாணிவிகாஸில் சேருங்கள்
ஹிந்தியை இதயபூர்வமாய் பேசிட வாருங்கள்

- **Eight** Graded Levels
- No Previous Hindi Qualifications
- Certificate Issued For Each Level

Shabari Siksha Sansthan, 193, Second Agraharam, Salem - 636 001.

Posted at Salem HPO 636 001. August - 2025

Published on 5th August - 2025

Posted on 6th & 7th of every month. R.N.I. No. : TNMUL/1999/00402
Postal Reg. No. :TN/WR/SLM(E)/121/WPP/2024 - 2026
Licenced to post without prepayment: TN/WR/SLM(E)/121/WPP/2024-2026

कृपया सभी पत्र व्यवहार में अपनी सदस्यता संख्या का अवश्य उल्लेख करें ।

அனைத்து கடித போக்குவரத்துகளிலும் தங்களுடைய உறுப்பினர் எண்ணை தவறாமல் குறிப்பிடவும்.

Please quote your subscription number in all correspondance.

If undelivered please return to
**Shabari Siksha Samachar,**
A.O. 194, Second Agraharam, Salem - 636 001

To

DON'T TEAR THE LABEL IF UNDELIVERED

**Learner's Choice**

# தமிழ் ஓவியம்

அழகாய் பழகுவோம் அமுதத் தமிழை
இயல்பாய் கற்போம் இன்பத் தமிழை
சபரியுடன் கற்போம் சரியாய் கற்போம்
அன்புடன் கற்போம் அழகுத் தமிழ்.

**PreKG - Rs. 45.00** **LKG & UKG - Rs. 90.00**

## SHABARI BOOK HOUSE

'Shabari Palace', 194, Second Agraharam, Salem - 636 001.
WhatsApp : 94431-65414
Landline Phone : 94433-65414, 98427-65414
email : gandhijiqa@gmail.com visit us @ www.shabari.org